June 2023

Monthly Magazine
Year 9 Issue 6

Satyug

नारायण रेकी सतसंग परिवार
In Giving We Believe

सतयुग

गुरु पौर्णिमा विशेषांक

हमारा उद्देश्य

"हर इंसान तन, मन, धन व संबंधों से स्वस्थ हो
हर घर में सुख, शांति समृद्धि हो व
हर व्यक्ति उन्नति, प्रगति व सफलता प्राप्त करे।"

वुधवार सतसंग

प्रत्येक वुधवार प्रात ११ वजे से ११.३० वजे तक

फेसवुक लाइव पर

सतसंग में भाग लेने के लिए नारायण रेकी सतसंग परिवार के फेसवुक पेज को ज्वाइन करें और सतसंग का आनंद लें।

नारायण गीत

नारायण-नारायण का उद्‌घोष जहाँ
राम राम मधुर धुन वहाँ
सबको खुशियाँ देता अपरम्पार,
जीवन में लाता सबके जो बहार
खोले, उन्नति, प्रगति, सफलता के द्वार,
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
हमारा एन.आर.एस.पी., प्यारा एन.आर.एस.पी.
प्यार, आदर, विश्वास बढ़ाता
रिश्तों को मजबूत बनाता, मजबूत बनाता
परोपकार का भाव जगाता
सच्चाई, नम्रता सेवा में विश्वास बढ़ाता
सत को करता अंगीकार
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुस्कान के राज बताता,
तन, मन, धन से देना सिखलाता
हमको जीना सिखलाता
घर-घर प्रेम के दीप जलाता
मन क्रम से जो हम देते वही लौटकर आता, वही लौटकर आता
बनाता सतयुग सा संसार
वो है, वो है हमारा नारायण रेकी सतसंग परिवार
एन.आर.एस.पी.,एन.आर.एस.पी.

।। 卐 ।।

पावन वाणी

प्रिय नारायण प्रेमियों,

।। नारायण नारायण ।।

गुरु की जीवन में बड़ी महिमा है। वह उस रोशनी के समान हैं जो जीवन में प्रकाश लाते हैं। हालांकि यह कोई औपचारिक पदवी नहीं है, हर वह व्यक्ति जिससे ज्ञान की प्राप्ति कर जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है, वही गुरु है। हमारे पहले गुरु होते हैं हमारे माता- पिता जो जन्म देने के साथ-साथ हमें हमारे अस्तित्व से परिचित कराते हैं । हमें जीवन के बुनियादी और अति आवश्यक कार्य करना सिखाते हैं और अच्छे संस्कार देकर हमें एक सार्थक जीवन के लिए तैयार करते हैं । दूसरा गुरु होता है हमारा परिवार जिससे आप संबंधों की घनिष्ठता सीखते हैं, प्यार, परवाह, एक-दूसरे की कद्र, भाईचारा और सौहार्द सीखते हैं । परिवार आपको अपनेपन के भावों से भरता है । तीसरा गुरु आपको अपने विद्यालय में मिलता है जो आपको किताबी ज्ञान प्रदान करता है ताकि आप पढ़-लिख कर एक शिक्षित व्यक्ति बनें जीवन और जीवन में मिलने वाले लोगों के प्रति एक समझदारी भरा सहयोग भरा दृष्टिकोण विकसित करते हुए भौतिक जगत की अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के योग्य बन सकें । चौथे गुरु होते हैं आपके मित्रगण जो आपको यह सिखाते हैं कि एक ऐसा रिश्ता है जो भावों से भरा है, जो हर पल आपको सहयोग करने के लिए तैयार है । इस तरह जीवन में आप जैसे - जैसे आगे बढ़ते जाते हैं आपको बहुत से व्यक्ति मिलते जाते हैं जिनसे आप जाने अनजाने कुछ न कुछ ऐसा सीखते हैं जो आपको सार्थक जीवन जीने में सहायता करते हैं । इस गुरु पूर्णिमा पर आप अपना जीवन ऐसे ही गुरुओं को समर्पित करें । उनके लिए कुछ ऐसा करें कि उनके चेहरे पर मुस्कान हो और उसकी वजह आप हों । यदि आप मुस्कराते हैं तो आपका भाग्य मुस्कराता है, पर यदि आपके कारण कोई और मुस्कराता है तो यह ब्रह्मांड मुस्कराता है, जब ब्रह्मांड मुस्कराता है, तो आप जीवन में वह सब सहज ही हासिल कर लेते हैं जो आपके भाग्य में नहीं है और एक सार्थक जीवन जीते हुए उन सभी गुरुओं के मस्तक को कृपा से ऊँचा करते हैं जिन्होंने आपको जीवन के खूबसूरत सूत्र दिये जिन्हें अपना कर आप अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें।

शेष कुशल

R. Modi

-: संपादिका :-
संध्या गुप्ता
09820122502
-: प्रधान कार्यालय :-
नारायण भवन
टोपीवाला कंपाउंड, स्टेशन रोड़
गोरेगांव वेस्ट, मुंबई
-: क्षेत्रीय कार्यालय :-

अहमदाबाद	जैविनी शाह	9712945552
अकोला	शोभा अग्रवाल	9423102461
अकोला	रिया अग्रवाल	9075322783
अमरावती	तरुलता अग्रवाल	9422855590
औरंगाबाद	माधुरी धानुका	7040666999
बैंगलोर	कनिष्का पोद्दार	7045724921
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9327784837
बैंगलोर	शुभांगी अग्रवाल	9341402211
बस्ती	पूनम गाड़िया	9839582411
बिहार	पूनम दूधानी	9431160611
भीलवाड़ा	रेखा चौधरी	8947036241
भोपाल	रेनू गट्टानी	9826377979
चेन्नई	निर्मला चौधरी	9380111170
दिल्ली (नोएडा)	तरुण चण्डक	9560338327
दिल्ली (नोएडा)	मेघा गुप्ता	9968696600
दिल्ली (डब्ल्यू)	रेनु विज	9899277422
धुलिया	रेणु भटवाल	878571680
गोंदिया	राधिका अग्रवाल	9326811588
गोहटी	सरला लाहोटी	9435042637
हैदराबाद	स्नेहलता केडिया	9247819681
इंदौर	धनश्री शिरालकर	9324799502
जालना	रजनी अग्रवाल	8888882666
जलगांव	काला अग्रवाल	9325038277
जयपुर	प्रीति शर्मा	9461046537
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
जयपुर	सुनीता शर्मा	8949357310
झुनझुनू	पुष्पा देवी टिबेरेवाल	9694966254
इचलकरंजी	जय प्रकाश गोयनका	9422043578
कोल्हापुर	राधिका कुमटेकर	9518980632
कोलकत्ता	स्वेटा केडिया	9831543533
कानपुर	नीलम अग्रवाल	9956359597
लातूर	ज्योति भूतड़ा	9657656991
मालेगांव	रेखा गारोडिया	9595659042
मालेगांव	आरती चौधरी	9673519641
मालेगांव	आरती दी	9518995867
मोरबी	कल्पना चोरौड़िया	8469927279
नागपुर	सुधा अग्रवाल	9373101818
नांदेड़	चेदा कावरा	9422415436
नवलगढ़	ममता सिंग्रोडिया	9460844144
नासिक	सुनीता अग्रवाल	9892344435
पुणे	आभा चौधरी	9373161261
पटना	अरबिंद कुमार	9422126725
पुरुलिया	मृदु राठी	9434012619
परतवाड़ा	राखी मनीष अग्रवाल	9763263911
रायपुर	अदिति अग्रवाल	7898588999
रांची	आनंद चौधरी	9431115477
सूरत	रंजना अग्रवाल	9328199171
सिकर (राजस्थान)	सुषमा अग्रवाल	9320066700
श्री गंगानगर	मधु त्रिवेदी	9468881560
सतारा	नीलम कदम	9923557133
शोलापुर	सुवर्णा बलदवा	9561414443
सिलीगुड़ी	आकांक्षा मुधरा	9564025556
टाटा नगर	उमा अग्रवाल	9642556770
राउरकेला	उमा अग्रवाल	9776890000
उदयपुर	गुणवंती गोयल	9223563020
उबर्ली	पल्लवी मलानी	9901382572
वाराणसी	अनीता भालोटिया	9918388543
विजयवाड़ा	किरण झँवर	9703933740
वर्धा	रूपा सिंघानिया	9833538222
विशाखापतनम	मंजू गुप्ता	9848936660

अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का नाम

ऑस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
दुबई	विमला पोद्दार	+971528371106
काठमांडू	रिचा केडिया	+977985-1132261
सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
शारजाह	शिल्पा मंजरे	+971501752655
बैंकॉक	गायत्री अग्रवाल	66952479920
विराटनगर	मंजू अग्रवाल	+977980-2792005
विराटनगर	वंदना गोयल	+977984-2377821

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

॥ नारायण नारायण ॥

गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएँ । इस बार का सतयुग पत्रिका का यह अंक समर्पित है हमारे जीवन के गुरु को, जिसने हमें जीवन के सही मायने सिखाये और हमारे जीवन को एक सार्थक राह दी । जीवन के हर मोड़ पर हमें गुरु की आवश्यकता होती है जिससे हम अपनी बात कह सकें, जिससे हम यह जान सकें कि हम जो कर रहे हैं वह सही है ना जो हमें हम से ज़्यादा जानता हो जो हमें हमारे जीवन के लिए उचित मार्गदर्शन कर सकता हो । इस अंक में हम जानने की कोशिश करेंगे गुरु को और जीवन में उनकी महत्ता को ।

आप सभी में विराजित उस गुरु तत्व को प्रणाम जिसने कितनों को सही मार्गदर्शन दिया ।

गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

आपकी अपनी
संध्या गुप्ता

अंतर्राष्ट्रीय कार्यालय :			
	नेपाल	रिचा केडिया	977985-1132261
	आस्ट्रेलिया	रंजना मोदी	61470045681
	बैंकाक	गायत्री अग्रवाल	66897604198
	कनाडा	पूजा आनंद	14168547020
	दुबई	विमला पोद्दार	971528371106
	शारजहा	शिल्पा मांजरे	971501752655
	जकार्ता	अपेक्षा जोगनी	9324889800
	लन्दन	सी.ए. अक्षता अग्रवाल	447828015548
	सिंगापुर	पूजा गुप्ता	6591454445
	डबलिनओहियो अमेरिका	स्नेह नारायण अग्रवाल	1-614-787-3341

आपके विचार सकारात्मक सोच पर आधारित आपके लेख, काव्य संग्रह आमंत्रित है - सतयुग को साकार करने के लिये/आपके विचार हमारे लिये मूल्यवान हैं । आप हमारी कोशिश को आगे बढ़ाने में हमारी मदद कर सकते है । अपने विचार उदगार, काव्य लेखन हमें पत्र द्वारा, ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं ।
हमारा ई-मेल है 2014satyug@gmail.com

we are on net
narayanreikisatsangparivar
@narayanreiki

प्रकाशक : नारायण रेकी सतसंग परिवार
मुद्रक : श्रीरंग प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई.
Call : 022-67847777

सतयुग का शंखनाद

श्रद्धा, विश्वास, आस्था (वह सम्मान का भाव है) - गुरु ज्ञान अनमोल है और उससे भी ज़्यादा अनमोल है उस ज्ञान से हमें परिचित करने वाला हमारा गुरु। गुरु की महिमा अनंत है, उनका थोड़ा–सा सान्निध्य ही जीवात्मा को सद्गति प्रदान करा सकता है। ऐसी ही अनमोल हैं हमारी गुरु राज दीदी ।

गुरु वह व्यक्ति होता है जो पहले अपने भीतर की कमियों को निकालता है, ताकि वह अपने शिष्यों को सही राह दिखा सके ।

राज दीदी के जीवन में सदैव एक ही ध्येय रहा - ऐसा क्या करूँ कि अपने होने और जीने को सार्थक कर जाऊँ? उनकी इस सोच ने उन्हें चिंतन के नये आयाम दिये, ध्यान के नये स्रोत दिये, ज्ञान के ऐसे अद्भुत संदेश दिये जो ब्रह्मांड से सीधे साधना में ग्रहण किए गये और जैसे गृहण किए गये वैसे की सत्संगियों के सामने ग्रंथ के रूप में रखे गये। ग्रंथ के पठन, पाठन और चिंतन ने सत्संगियों के लिए मानसिक भोज्य का कार्य किया है जो उनकी क्या ? क्यों? और कैसे की भूख को तृप्त कर रहे हैं । ब्रह्मांडीय संदेश एक ग्रंथ और ब्रह्मांडीय संदेश एन्साइक्लोपीडिया के पार्ट 1 के रूप में रामायण गीता के स्तर सी असाधारण ग्रंथ की रचना साधारण लगने वाली हमारी गुरु राज दीदी ही कर सकती हैं । हर एक सत्संगी के मन की बात सुने बिना ही समझ जाना और सत्संग में उनका समाधान बता देना एक अद्भुत कला है । जब गुरु माँ राज दीदी को विभिन्न किरदारों में अपना रोल बखूबी निभाते देखते हैं तो सहसा मन से निकलता है:-

जब आप ज्ञान का दर्शन कराती हो तब आप ज्ञानेश्वरी लगती हो ।

जब आप अपने स्नेहपाश में बांधती हो तो स्नेहांजली लगती हो । जब आप सही शब्दों का प्रयोग करना सिखाती हो तो साक्षात् सरस्वती लगती हो ।

जब आप प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त करने का मंत्र सिखलाती हो तब आप महालक्ष्मी लगती हो ।

जब आप हमारी ग़लतियों पर भी स्नेह से पुकारती हो और कहती हो कोई बात नहीं तो एक श्रद्धेय पिता लगती हो ।

जब आप हमारी परेशानियों का हल हमसे ही सुलझवाती हो तब आप एक मार्गदर्शिका बड़ी बहन लगती हो ।

जब आप हमारी सफलताओं में और हमारी खुशियों में खिलखिलाती ढ़ेर सारा आशीर्वाद देती हो तो साक्षात् जन्मदात्री माँ लगती हो ।

सच कहूँ सत्संगियों के दिल का हाल, तो गुरु माँ आप तो हमें उस परम पिता नारायण से मिलवाने वाली नारायणी लगती हो ।

गुरु की भूमिका सब के जीवन में अहम होती है। गुरु के प्रति हर मनुष्य आदर और सम्मान का भाव रखता है यहाँ तक कि गुरु को ईश्वर से ऊपर रखता है। गुरु तुम्हें, तुम से मिलवाता है । वह तुम्हें आत्मबोध कराता है, तुम्हारे भीतर छिपी तुम्हारी शक्तियों से तुम्हें मिलवाता है । तुम्हारे हर सावल का उत्तर होता है उनके पास और उस उत्तर को सार्थकता प्रदान करता है गुरु । तुम्हें सही कर्म का हिस्सेदार बनाता है गुरु । गुरु जीवन की नैया को खूबसूरती से खेने और सर्वोत्तम तरीक़े

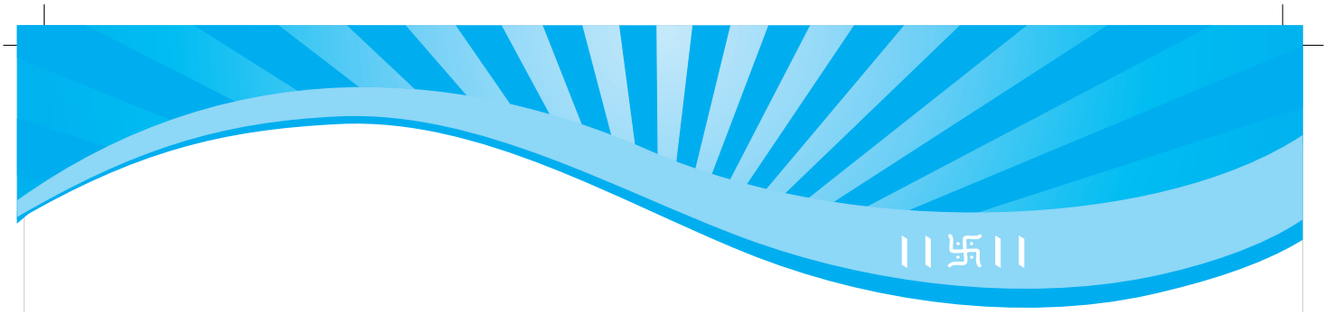

से पार लगाने के उपायों को बताता है । गुरु तुम्हारे व्यक्तित्व का निर्माण करता है । गुरु तुम्हें एक माँ की तरह सजाता है और पिता की तरह संवारता है । तुम्हें तुम्हारे स्व से परिचित कराते हुए आत्मा के स्तर तक ऊँचा उठाता है । हर मनुष्य अपने जीवन में लिए जाने वाले छोटे से बड़े फैसलों के लिए गुरु की इच्छा जानना चाहता है । ज़िंदगी के हर छोर में गुरु की आवश्यकता है यदि आप कला, संगीत, नृत्य जैसे किसी भी कार्य को सीखना चाहते हैं तो उसके लिए आपको उस गुरु के पास जाकर उस चीज़ का ज्ञान प्राप्त करना होगा। संगीत के गुरु संगीत का बोध करवाते हैं। कला के गुरु कला का बोध करवाते हैं। और नृत्य के गुरु नृत्य का बोध कराते हैं इसी तरह हर कार्य क्षेत्र में गुरु की भूमिका अहम है।

राज दीदी और एनआरएसपी का सतसंग वो गुरु है जो हमें जीवन जीने का नया अंदाज़ सिखाता है। जो हमें यह सिखाता है कि प्रतिदिन अपनी इच्छा उस परम पिता के सामने समर्पित भाव से रख दो और निश्चिंत होकर ईमानदारी, वफ़ादारी से भर कर विनम्रता से भरपूर व्यवहार करते हुए सभी के प्रति अपना शतप्रतिशत देकर अपने कर्म करो और जीवन में खुशी, आनंद, उत्साह, उन्नति, प्रगति, सफलता, सुख, शांति, समृद्धि के मार्ग को सहज ही खोल लो । यह है हमारी गुरु माँ राज दीदी की गुरुता। यह पंक्तियाँ दीदी के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं,

वह व्यक्ति जो ज्ञान से हमारे जीवन को आसान बनाए

वह ही हमारे लिए गुरु कहलाये । गुरु वह व्यक्ति होता है जो शिष्य को मंज़िल तक पहुँचाने के लिए राह दिखाता है ।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि - गढ़ि काढ़ै खोट

अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट

गुरु कुम्हार है और शिष्य घड़ा है, भीतर से हाथ का सहारा देकर, बाहर से और गढ़ - गढ़ कर शिष्य की बुराई को निकालते हैं और उसे निखारते हैं । इसी तरह राज दीदी बहुत–सी साधनाओं के माध्यम से, बहुत ही सरल भाषा और बहुत ही सहज अंदाज़ में हमें सिखाते हैं -

1) सहज बनें, सरल बनें और ऐसे बनें कि जिस जगह आप खड़े हों लोगों को खुशी की, आनंद की, विश्वास की अनुभूति हो।

2) अपना सर्वोत्तम दें सर्वोत्तम पाएँ ।

3) अच्छे और सकारात्मक कर्म करें फल अच्छा ही होगा ।

4) लोकप्रिय बनना है तो यदि किसी ने आपको किसी की कोई अच्छाई बताई है तो वह उस तक पहुँचा दो। दूसरों को आंकने में समय न लगायें। बिना शर्त प्यार दें और प्यार, आदर, सम्मान प्रशंसा से भरे सप्तसितारा जीवन के हक़दार बन जायें।

5) आप जितना दूसरों को प्रेम देंगे उससे अधिक पायेंगे और इससे आपके लिए देना और अधिक आसान हो जाएगा ।

6) अच्छाई, भलाई, करुणा, दया ममता, ईमानदारी, वफ़ादारी, विनम्रता के रास्ते पर चलें और जीवन को सार्थकता प्रदान करें ।

7) आप कुछ भी प्राप्त करना चाहते हैं तो सेवा, समर्पण और 'मैं कितना करता हूं' से हटकर, 'मैं सिर्फ़ एक माध्यम हूँ', यह भाव होना अति आवश्यक है ।

8) जब आप अपने स्वभाव में सहन शक्ति, समयबद्धता, समझदारी और अच्छाई अपनायेंगे तो दुनिया के बारे में आपकी राय और अच्छी होगी ।

9) सफलता उनको मिलती है जो खुले दिल से दूसरों की सफलताओं को स्वीकार करते हैं ।

10) समय निरंतर आगे बढ़ रहा है । इस क्षणिक समय में अपने जीवन में निःस्वार्थ सेवा का भाव लेकर प्राणिमात्र की सेवा करने का अवसर मिले तो इसे ईश कृपा समझ लेना चाहिए ।

यह ऐसे गुरु मंत्र हैं जिन्हें गुरु माँ राज दीदी समय- समय पर हमें देती रही हैं । इस गुरु पूर्णिमा एक गुरु दक्षिणा अपनी गुरु माँ राज दीदी को - हमारे भीतर बस एक ही भाव, 'मैं वैसी बन जाऊँ जो तेरी मर्ज़ी है।'

ज्ञान मँजूषा

ज्ञान मंजूषा के इस स्तंभ में हम समय -समय पर सतसंगियों द्वारा राज दीदी से पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लेकर आते हैं जो दीदी सतसंगियों को देते हैं, जिन्हें अपना कर सतसंगियों का जीवन सप्त सितारा हो गया है ।

प्रश्न 1 : हम हमारे विचार, व्यवहार, वाणी पर कैसे नियंत्रण रखें ?

राज दीदी ने कहा आपको प्रयास करने होंगे, थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। कुछ दिनों तक एक पुस्तिका में आपको आपके बारे में लिखना है कि हम दिन भर में क्या-क्या करते हैं। हफ्ते भर के भीतर ही आपके विचार, व्यवहार और वाणी में परिवर्तन आ जाएगा । इस तकनीक को आप इस्तेमाल कीजिए, NRSP के कई लोगों ने यह तकनीक अपनाई है और उनमें परिवर्तन आये हैं ।

प्रश्न 2: एक सफल व्यक्ति की परिभाषा क्या है, या फिर हम ऐसा क्या करें कि हम हमारे जीवन में सफल बन सकें?

राज दीदी :- संतुष्टता और सार्थकता से भरा जीवन हमारे लिए यही सफलता की परिभाषा है। 25 साल से मैं समाज सेवा का कार्य कर रही हूं। मैं घर से ही कार्य करती थी क्योंकि बच्चे छोटे थे। बच्चे 2:30 बजे तक घर आ जाते थे, फिर पढ़ाई करते थे और शाम को खेलने जाते थे। उस वक्त किसी ने मुझसे कहा था कि पास ही में एक हॉल है, आप वहां जाएंगे तो पेशेंट भी ज्यादा आएंगे और आपके काम में भी वृद्धि होगी। मैंने कुछ दिन का वक्त मांगा और कहा कि मैं सोचकर बताती हूं। मेरे मन में यह प्रश्न चल ही रहा था कि अचानक से मैं टीवी के सामने गई, उस पर एक 75 वर्षीय सिलेब्रिटी का इंटरव्यू चल रहा था। उस सिलेब्रिटी से पूछा गया आज आपके पास नेम, फेम, मनी सब कुछ है लेकिन क्या आपके जीवन में ऐसी कोई चीज है जो आप पीछे मुड़कर देखते हैं तो आपको उसकी कमी खलती है? उन्होंने कहा, जब मेरे बच्चों को मेरी जरूरत थी तब मैं उनके पास मौजूद नहीं थी, आज मुझे उनकी ज़रूरत है तो आज वे मेरे पास नहीं हैं । उसी वक्त मैंने यह निश्चित कर लिया था कि मुझे 2:30 बजे तक फ्री होना है और बच्चों के रूटीन में कोई कॉम्प्रोमाइज नहीं करना है।

प्रश्न 3 : जीवन में सभी wishes पूरी हों उसके लिए हमें ऐसा क्या करना चाहिए ?

राज दीदी : आपकी wish list छोटी होनी चाहिए और In giving we believe आपकी प्राथमिकता होनी चाहिए । हम जितना फोकस हमारी विश पूरी करने के लिए रखते हैं अगर उससे भी कई ज्यादा प्रयत्न हम दूसरों की विश पूरी करने में लगाएं तो दूसरों से आशीर्वाद ही मिलेगा । जब हम दूसरों की विश पूरी करने के लिए उनकी मदद करते हैं तो हमारी प्राथमिक विश पूरी करने के लिए प्रकृति हमारी मदद करती है। दूसरों के काम होते हैं, उसकी वजह से हमें जो आशीर्वाद मिलता है उससे हमारे काम स्वतः ही बनते चले जाते हैं।

प्रश्न 4 : ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी उठने के फायदे और महत्व सभी को पता है लेकिन आजकल की जो लाइफ स्टाइल है इसमें कई बार सोने में लेट हो जाता है और जल्दी उठ भी नहीं पाते। ऐसा हमें क्या करना चाहिए कि हम जल्दी उठ सकें और लाइफ लॉग इस चीज को फॉलो कर सकें ताकि हमारी जल्दी उठने की आदत हो जाए।

राज दीदी :- आप 11:00 बजे सोते हैं तो उससे 5 मिनट जल्दी सोना शुरू कर दीजिए और आप सुबह 9:00 बजे उठते हैं तो उससे 5 मिनट जल्दी उठना शुरू कर दीजिए। ऐसे करके आप धीरे-धीरे कुछ महीनों में ब्रह्म मुहूर्त में उठना शुरू कर देंगे।

प्रश्न 5 :- अपने कार्यों को सफल बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

राज दीदी :- अच्छे विचार, अच्छे कार्यों को सफल बनाते हैं।

मिस्टर माधव कहते हैं हमारे भीतर निहित जो नकारात्मक ऊर्जा है क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार यह सब से ज्यादा नकारात्मक हैं और आपकी औरा को तार-तार कर देते हैं । जिसका सुधार भी संभव नहीं है । जब तक मिस्टर ए के मन में सामने वाले के प्रति इरिटेशन, फ्रस्ट्रेशन होता है नेगेटिव ऊर्जा उनके शरीर में प्रवाहित होती है । वे अपने काम के लिए जो भी कोशिश करते हैं वो निष्फल हो जाती है और उनका काम नहीं होता है । जैसे ही मिस्टर ए ने सामने वाले के लिए पॉजिटिव तरंगें भेजनी शुरू कीं तो उनके काम बनते चले गए।

हमें यह नहीं पता है कि कब हमारी नकारात्मक ऊर्जा कहां जाकर क्या कार्य करती है, हम जज भी नहीं कर पाते हैं।

केस 1) हमारे पास एक परिवार की बहू आयी, वह टीचर थी और उसने अपनी 11-12 साल की लड़की के बारे में बताना शुरू किया। वह बच्ची दिन प्रतिदिन लापरवाह होती जा रही थी, उद्दंड थी, परंतु वह महिला चाहती थी कि उसकी बेटी सिंसियर एवं रिस्पांसिबल बने। वह महिला बच्चों को पढ़ाती थी, वह चाहती थी कि कम से कम उसकी बेटी तो सही लाइन पर रहे। उसने पूछा हम किस तरह से प्रार्थना करें कि बच्ची सही लाइन पर रहे? हमने पूछा कि आपके घर में कौन-कौन है। घर में सास,ससुर,पति और बेटी ही हैं । सास के साथ रिलेशन अच्छे नहीं हैं उनको देखते ही मुझे इरिटेशन होती है। उस महिला की यह इरिटेशन ही उसकी नेगेटिव तरंगें उसके शरीर में प्रवाहित होती थी और उसके छींटे उसकी बेटी पर जाते थे । हमने उनसे कहा, आपके मन में सासू मां के प्रति जो इरिटेशन है, उसकी जगह आपको आदर भाव, प्रेम भेजना होगा और आपको उनकी केयर भी करनी है। आप यदि सासु मां को पॉजिटिव वाइब्स भेजते हैं तो आपकी बेटी सिंसियर, रिस्पांसिबल होती चली जाएगी। सुबह उठते से ही आपको सासु मां को सामने विजुअलाइज करना है और यह पॉजिटिविटी एफर्मेशंस 7 टाइम्स बोलना है - आई लव यू, आई लाइक यू, आई रिस्पेक्ट यू, नारायण ब्लेस यू, नारायण ब्लेस यू, नारायण ब्लेस यू। यही प्रक्रिया आपको रात को सोते वक्त भी करनी है। कुछ ही दिनों में उस महिला की औरा में पॉजिटिविटी आती चली गई और साथ ही साथ उनकी बेटी सिन्सियर,रिस्पांसिबल बनती चली गई।

राज दीदी ने कहा ऐसे ही आपको यदि किसी को देखकर इरिटेशन, फ्रस्ट्रेशन होती है, सामने वाले पर क्या असर

होता है वो नहीं पता, लेकिन आपकी औरा तार तार हो जाती है। उस अवस्था में जो चीजें आपके भाग्य में है वह आप हासिल नहीं कर पाते। आप जिनके साथ रहते हैं, जो आपके साथ रहते हैं सबसे पहले हमें उन पर काम करना है। परिवार के किसी भी सदस्य के प्रति हमारे भीतर नकारात्मक भाव है तो हमें उसे पहले दूर करना चाहिए क्योंकि वह नेगेटिव एनर्जी ही हमें अपने जीवन में आगे बढ़ने नहीं देती है। यह करने से हमारी औरा कमज़ोर होती है और हम जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। आई लव यू, आई लाइक यू, आई रिस्पेक्ट यू, नारायण ब्लेस यू, नारायण ब्लेस यू, नारायण ब्लेस यू कहिए और आपका जीवन सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, लव, रिस्पेक्ट, फेथ, केयर इस एफर्मेशन का उसपर कितना असर हुआ इट्स ओके पर आपका यह बारंबार दोहराना आपके जीवन को समृद्धि शाली बना देगा और यही सब चीज़ें आपके जीवन में आती चली जाएंगी। आपके जीवन में बहुत परिवर्तन आ जाएगा।

प्रश्न 6 : हम किसी विशेष मकसद से प्रार्थना कर रहे हैं और हमारा मकसद पूरा नहीं हो रहा है तो हमारा मन डगमगाने लगता है, ऐसी अवस्था में हमें क्या करना चाहिए ?

राज दीदी :- आपसे नियमित रूप से प्रार्थना हो रही है, regular प्रार्थना हो रही है तो ब्रह्मांड से आपको यह इशारा है कि वह आपसे प्रार्थना करवा रहा है, तो निश्चित ही आपकी प्रार्थना सुनेगा और प्रार्थना ज़रूर फलीभूत होगी। कई लोग नियम लेते हैं कि हम नियमित प्रार्थना करेंगे लेकिन वह कर नहीं पाते हैं और आपसे अगर नियमित रूप से प्रार्थना हो रही है तो इसका मतलब यह है कि वह आपकी प्रार्थना सुन रहा है। राज दीदी ने कहा हम अगर हमारी किसी विशेष विश के लिए प्रार्थना कर रहे हैं और हमारा पूरा फ़ोकस उसी प्रार्थना पर है और इसी बीच आपको कोई अर्जेंट काम आ जाए और आपका पूरा फ़ोकस अपनी प्राथमिक विश पर ही हो और आप अर्जेंट ज़रूरत पर ध्यान भी ना दें तो भी ब्रह्मांड को भली-भांति पता होता है कि आपकी इच्छा बाद में भी पूरी की जा सकती है इस वक्त आपकी जो जरूरत है वह पूरी होना आवश्यक है। जब आपकी आवश्यक ज़रूरत पूरी हो जाती है, आप उसका धन्यवाद करना भूल जाते हैं क्योंकि आपका पूरा फ़ोकस आपकी प्राथमिक विश पर ही होता है।

हम कई लोगों से सुनते हैं कि हमने एक विशेष चीज के लिए खूब प्रार्थना की लेकिन वह विश पूरी नहीं हुई, बहुत दुःख होता है। लेकिन कुछ समय बाद वही लोग कहते हैं कि भले ही वह चीज हमें हासिल नहीं हुई परंतु आज हमें जो चीज़ मिली है वह बहुत कीमती है। एक उदाहरण देते हैं - कई बार हम एक निश्चित डेट देकर प्रार्थना करते हैं कि जुलाई एंड तक हमारा यह कार्य हो जाए और आपका यह काम नहीं होता। आप ज़रा सा विचार करके थोड़ा सा मंथन करेंगे तो आपको यह एहसास होगा कि मेरे ऐसे कई काम बन गए जिनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। जुलाई माह तक आपका काम ना हो तो प्रकृति की ज़िम्मेदारी हो जाती है कि वह ब्याज समेत आपको दे और उसके साथ और भी कई चीजों को लेकर आएगा।

आपके लिए कोई भी अगर ज़रा सा कुछ भी करता है तो हमारे मन में यह भाव आता है कि हमें उनके लिए भी कुछ करना चाहिए। हम इतना न कर सके तो कम से कम कुछ थोड़ा सा तो करें। हम तो इंसान हैं हमारे मन में यह भाव आ जाता है तो प्रकृति अपने पास कुछ भी बाकी नहीं रखने वाली है, हमें ब्याज समेत जरूर देगी। हमें इस बात से संतुष्ट रहना चाहिए कि हमारा यह कार्य नहीं हुआ तो प्रकृति हमें गुणकों में देगी। हमारे जो कार्य बनते जाते हैं उसके लिए हमें

निरंतर आभार प्रकट करते रहना चाहिए। राज दीदी कहते हैं कि यदि हमारे मन में कोई ऐसा भाव भी आ गया कि हमें किसी विश के लिए प्रार्थना करनी है तो वह भाव भी हमें प्रकृति ही भेजती है। 24 घंटे में से हम ज़्यादा से ज़्यादा 4 घंटा प्रार्थना कर सकते हैं। बाक़ी समय पर हमें यह चैक करना चाहिए कि हमारे विचार, व्यवहार, वाणी कैसे हैं? वाणी और व्यवहार के माध्यम से आपने यदि किसी को hurt कर दिया तो आपकी wish आपसे दूर चली जाती है। इसी वजह से लोगों की wish पूरी होने में कई बार वक्त लगता है। आपको प्रिकॉशन रखने होंगे ।

प्रश्न 7 : यदि कोई हमारे लिए प्रार्थना कर रहा है तो भी तो हमारे कार्मिक अकाउंट बंधते हैं। कई बार हमें पता ही नहीं होता है कि हमारे लिए कितने लोग प्रार्थना कर रहे है, तो इसको कैसे settle करें?

राज दीदी :- यदि मैं आपके लिए प्रार्थना कर रही हूं और आपने मुझसे प्रार्थना करने के लिए नहीं कहा है तो आप कर्म बंधनों से नहीं बंधते। मेरे खाते में अवश्य पुण्य जमा होता है क्योंकि मैं आपके भले के लिए प्रार्थना कर रही हूं। राज दीदी ने कहा यदि मैंने आपसे कह दिया कि मैं आपके लिए प्रार्थना कर रही हूं तो भी आपके कर्म नहीं बंधते। आपको एनर्जी एक्सचेंज लेना ज़रूरी है क्योंकि आपने उनसे सेवा ली है। एक छोटी सी चाकलेट दे दीजिए, गुलाब का फूल दे दीजिए। जब हमें पता ही नहीं होता कि कितने लोग हमारे लिए प्रार्थना कर रहे हैं, दूसरी ओर हम भी तो कितने लोगों के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, जिन्हें पता भी नहीं है कि हम उनके लिए प्रार्थना कर रहे हैं। यह स्वतः बैलेंस होता है। फिर भी आपको लगता है, बहुत सारे लोग मेरे लिए प्रार्थना कर रहे हैं तो आप उनके लिए और अधिक प्रार्थना करिए। कभी आपको लगता है कि इसको कैश देकर मदद करना जरूरी है तो आप उसे पैसे भी दे सकते हैं। भले ही आपको प्रार्थना की ज़रूरत है मगर जब तक आपने अपने मुंह से नहीं बोला और सामने वाला बारंबार बोल रहा है कि आप हमारी प्रार्थनाओं में शामिल हैं तो आपके कर्म नहीं बंधते।

दोस्तों यह कुछ ऐसे सवाल हैं जो अक्सर हम सबके मन में घूमते हैं ।इनका उत्तर पढ़िए और मन की जिज्ञासा को शांत कर एक सप्त सितारा जीवन के हक़दार बन जाइए।

प्रतीक लड्ढा को जन्मदिन (१७ जून) पर
सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का आशीर्वाद।

रेशमा हेड़ा और मनीष हेड़ा को (३० जून) विवाह वर्षगांठ पर
सुख, शांति, सेहत, समृद्धि, उन्नति, प्रगति, सफलता का आशीर्वाद।

युवा मंच

गुरु जो अंधकार को दूर कर प्रकाश में ले जाये।

आज के युवा जिनके हाथ में नारायण रेकी सतसंग परिवार का परचम है, वे आने वाली पीढ़ी के लिए गुरु के समकक्ष हैं। आज सतयुग पत्रिका के माध्यम से आवाहन करते हैं कि गुरु के सभी प्रधान गुणों को जीवन में उतारें ताकि आप आने वाली पीढ़ी का सही मार्गदर्शन कर सकें।

जब भी आपको गुरु की भूमिका निभाने का अवसर मिले तो कुछ बातों को ध्यान में अवश्य रखें-

आपका व्यक्तित्व व आचरण ही आपके शिष्य के लिये सर्वोत्तम उदाहरण होता है अतः जिस मार्ग पर आप उन्हें चलाना चाहते हैं पहले ईमानदारी से उसका अनुसरण स्वयं करें। यह बताते हुए एक कथा याद आती है - एक माँ अपने पाँच वर्षीय बेटे को लेकर, एक पहुँचे हुए संत के पास पहुँची और बोली- गुरु जी यह बच्चा बहुत गुड़ खाता है। इसके सिर पर हाथ रख दीजिए और समझा दीजिए कि इतना गुड़ न खाए। गुरु जी मुस्कुराए और बोले- बेटा, इसको एक महीने बाद यहाँ लाना तब मैं इसे आशीर्वाद दूँगा। महीने भर पश्चात् वो पुनः संत के पास आई और फिर से बोली- अब आप इसको आशीर्वाद दीजिए कि यह गुड़ खाना छोड़ दे। पर संत बोले कि तुम बच्चे को एक हफ़्ते के बाद लाना । सप्ताह बीता और वो स्त्री पुनः अपने बच्चे को संत के सामने लेकर हाज़िर हो गई। इस बार संत ने बालक के सिर पर हाथ फेरा और बोले - बेटा आपकी सेहत के लिए अति का गुड़ खाना ठीक नहीं है अतः आप गुड़ का सेवन बंद कर दो ।

स्त्री को लग रहा था कि संत कोई अनुष्ठान करेंगे अतः उत्सुकता वश उसने संत से पूछा - इतनी-सी बात कहने के लिए आपने इतना समय क्यों लगाया। इस पर संत ने उत्तर दिया कि - हे देवी, मुझे स्वयं गुड़ बहुत पसंद है सो पहले मुझे गुड़ का त्याग करना था । यह करने में मुझे इतना समय लगा । मैं वही उपदेश दे सकता हूँ जिसका पालन मैं स्वयं शिद्दत से करता हूँ ।

अगर आप ईमानदारी सिखाएँ तो पहले स्वयं हर क्षेत्र में ईमानदारी बरतें।

एक गुरु को समत्व भाव में ही जीना होता है । पद, पैसा, प्रतिष्ठा, भाईचारे से उठकर सभी के साथ सम व्यवहार रखना, जाति धर्म व समुदाय के मापदंडों को किनारे रख कर सभी को अंगीकार करना और जिस प्रकार सूर्य कीचड़ व गंगाजल सभी को एक समान अपनी ऊर्जा देता है , उसी प्रकार अपने सभी शिष्यों को आगे बढ़ाना।

गुरु संदीपन के यहाँ जब कृष्ण व सुदामा शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तब यह जानते हुए भी कि कृष्ण दिव्य पुरुष हैं संदीपन दोनों से समान सेवा कार्य करवाते, समान भोजन उपलब्ध कराते व सभी शिष्यों से समान व्यवहार करते। ऐसी है हमारी संस्कृति जिसे आज की युवा पीढ़ी को आत्मसात कर जीवित रखना है।

एक और तथ्य गुरु को ध्यान रखना चाहिए वो है सही सलाह देना। रामचरित मानस में यह बहुत ही सुंदर तरीक़े से बताया गया है -

सचिव, वैद्य, गुरु तीन जो, प्रिय बोलेहि भय आस, राज धर्म तन तीन कर होए बेगही नास।

(सचिव, वैद्य और गुरु अगर डर से सत्य न कहकर प्रिय ही बोलें तो राज्य, धर्म व तन तीनों का क्षय होता है।)

गुरु को निडर होकर सत्य का साथ देना चाहिए तभी समाज व शिष्य का कल्याण संभव है।

जीवन में आदर्शों को पहले स्वयं उतारें व उपर्युक्त गुणों से संपन्न एक सुंदर सतयुगी समाज का निर्माण करें।

।।卐।।

बच्चों की फुलवारी

आदि शंकराचार्य ने कहा, 'मौना व्याख्य प्रकटिथ, पारा, ब्रह्म तथ्वं युवनम्'। (अर्थः मैं दक्षिणामूर्ति (प्रथम गुरु) की प्रशंसा करता हूं और उन्हें सलाम करता हूं, जो अपनी मौन अवस्था के माध्यम से सर्वोच्च ब्रह्म की वास्तविक प्रकृति की व्याख्या करते हैं)।

एक शिक्षक ज्ञान देता है, एक गुरु ज्ञान देता है।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर सतयुग का यह अंक गुरु को समर्पित है।

गुरु पूर्णिमा पूरी तरह से गुरु को समर्पित दिन है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, गुरु पूर्णिमा वह दिन है जब भगवान शिव ने अपना ज्ञान सात अनुयायियों या 'सप्तऋषियों' को हस्तांतरित किया था। इसी कारण भगवान शिव को प्रथम गुरु कहा जाने लगा।

गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि महाभारत के रचयिता वेद व्यास का जन्म इसी शुभ दिन पर हुआ था। इसलिए, व्यास पूर्णिमा नाम अस्तित्व में आया।

जैन धर्म की पौराणिक कथाओं में, यह माना जाता है कि जैन धर्म के सबसे प्रसिद्ध तीर्थंकरों में से एक, महावीर को इस दिन अपना पहला अनुयायी मिला और वे आधिकारिक तौर पर गुरु बन गए।

ऐसा माना जाता है कि गुरु बुद्ध ने अपना पहला उपदेश इसी दिन दिया था।

जब हम गुरु और अनुशासन की बात करते हैं तो सबसे पहली कहानी जो हमारे दिमाग में आती है वह एकलव्य की कहानी है। एकलव्य एक गरीब शिकारी का पुत्र था। वह जंगलों के हिरणों को तेंदुओं से बचाने के लिए तीरंदाजी सीखना चाहता था। उनकी इच्छा गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीखने की थी। द्रोणाचार्य पांडवों और कौरवों के गुरु थे और उस समय शाही गुरु के लिए किसी बाहरी छात्र को ले जाना वर्जित था। लेकिन एकलव्य का समर्पण ऐसा था, उसने गुरु द्रोणाचार्य की एक मूर्ति बनाई और धनुर्विद्या का अभ्यास किया। अर्जुन को उनकी धनुर्विद्या के बारे में पता चला और उन्होंने उनसे पूछा कि उनके गुरु कौन हैं। जवाब था गुरु द्रोणाचार्य। जब अर्जुन ने यह मामला गुरु द्रोणाचार्य के पास उठाया तो गुरु एकलव्य से मिलने गए। जैसा कि उन दिनों प्रथा थी, गुरु ने एकलव्य से गुरु दक्षिणा के बदले उसका कड़ा अंगूठा माँगा। एकलव्य ने बिना कुछ सोचे अपना अंगूठा काटकर गुरु को दे दिया।

इस कहानी का एक पहलू हमें गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण का महत्व सिखाता है। दूसरा पहलू हमें सिखाता है कि कैसे एक गुरु आपकी स्थिति को एक सामान्य छात्र से ऊपर उठाकर अमर बना सकता है। आज जब हम अनुशासन की बात करते हैं तो हर व्यक्ति के मन में एकलव्य का नाम आता है।

अपने गुरु का चयन सोच-समझकर करें। एक बार आपने चुन लिया

अपने गुरु का अनुसरण करें, पूर्ण समर्पण में रहें। अपने गुरु के शब्दों को ब्रह्माण्ड के दिव्य संदेश के रूप में स्वीकार करें।

याद रखें आपके कर्म ऐसे होने चाहिए कि गुरु आप तक पहुंचें। गुरु का आशीर्वाद आपको सामान्य स्थिति से असाधारण स्थिति में पहुंचा सकता है।

दीदी के छाँव तले

गुरु हमारे जीवन की एक ऐसी हस्ती होती है जिसका एक - एक पल इस बात में व्यतीत होता है कि उसके शिष्यों की उन्नति हो सके । इसके लिये गुरु साधना करता है, खोजता है और ऐसी अनोखी साधनाओं को, क्रियाओं को प्रतिपादित करता है जिसे अपना कर शिष्य आत्मुन्नति कर सके । ऐसी ही हैं हमारी गुरु राज दीदी जिनकी हर पल यह चाहना रहती है हर पल यह कामना रहती है कि हर व्यक्ति सप्त सितारा जीवन जिए । इसके लिए इस बार दीदी ने साधारण से लगने वाले असाधारण जल को अमृत बनाने की साधना सत्संगियों को दी। इस साधना से अनेकों लोगों को अनेकों लाभ हुए । दीदी के छाँव तले स्तंभ को इस बार हम एक नये कलेवर में प्रस्तुत कर रहे हैं ।

अमृत रूपी जल के चमत्कार

18 मई से राज दीदी ने ब्रह्म मुहूर्त की अमृत बेला में जल को संजीवनी रूपी अमृत बना कर तन–मन–धन–संबंधों को स्वस्थ करने की तकनीक की शुरूआत करवाई है। पहले ही दिन से अमृत के चमत्कारिक प्रभावों की शेयरिंग आने लगी है। उन अनगिनत चमत्कारों में से कुछ चुनिंदा अनुभव आपके साथ यहां साझा कर रहे हैं:-

1) 35 सालों से मेरे एक रिश्तेदार महिला से नारायण–नारायण संबंध थे। पहले ही दिन का अमृत मैंने उन्हें विजुलाइज करते हुए, लव यू, लाइक यू, रिस्पेक्ट यू कह कर ग्रहण किया। अमृत ग्रहण करते ही मेरे मन में अपार शांति का अनुभव हुआ और उनके प्रति मन में कोई द्वेष भाव नहीं बचा, सब कुछ अच्छा लग रहा है।

2) गर्भवती को डॉक्टर ने कहा कि डिलीवरी के लिए दर्द के इंजेक्शन देने होंगे। अमृत ग्रहण करने के कुछ घंटों में ही अपनेआप दर्द शुरू हो गए और सरलता से नॉर्मल डिलीवरी में पुत्र रत्न प्राप्त किया है।

3) 15 वर्षों से ज़्यादा से कब्ज़ से पीड़ित हूं, कई डॉक्टरों को दिखाया, कई तरह के इलाज लिए। अमृत की एक डोज़ से ही पूर्ण आराम है, जो कई सालों से नहीं हुआ था।

4) मेरे हाथ में इतना दर्द था कि हाथ उठाने में भी तकलीफ होती थी। अमृत जल लेने से जैसे चमत्कार ही हुआ है।

5) मैं परिवार के साथ लंदन घूमने आई हूं, यहां आते ही मेरा पेट खराब हो गया, बहुत कमज़ोरी आ गई। मुझे लगा कि मेरा पूरा ट्रिप ऐसे ही जायेगा, वापस लौटाने का सोचने लगी। बी. पी. भी बहुत ज़्यादा चल रहा था। फिर मैंने अमृत जल लिया, एक ही डोज़ में मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ महसूस कर रही हूं।

6) मेरी पालतू गौ माता को डॉक्टर ने लंपी बीमारी बताई और फिर कई इंजेक्शंस भी लगवाए, परंतु फ़र्क नहीं पड़ा। आपके बताए अमृत जल से मेरी गाय बिल्कुल ठीक हो गई है, कोई लंपी के निशान तक नहीं हैं।

7) मैं चीज़ों को नियमबद्ध तरीके से यथास्थान ही रखती हूं और घर के सदस्यों से भी यही अपेक्षा रखती हूं। यदि कोई चूक होती है तो मैं अपने मन को शांत रखने के लिए यह मंत्र दोहराती हूं, मेरा चित्त शांत और प्रसन्न है। जब से अमृत जल ग्रहण करना शुरू किया है, मेरा चित्त प्रतिपल प्रतिक्षण शांत ही है और मैं बहुत हल्का महसूस कर रही हूं।

8) एसिडिटी में राहत ।

9) फिशर की समस्या में बहुत बड़ी राहत मिली है ।

10)शुगर लेवल बिल्कुल नॉर्मल आ गया है।

11) गर्दन में बहुत दिनों से दर्द था, घुमाने में भी दर्द होता था, जल ग्रहण करने लगी, तब से दर्द को भूल ही गई।

12) घर में नारायण–नारायण स्तिथि रहती थी। अमृत जल दिया, सब आपस में प्रेम से रहते हैं।

13) डायबिटीज़ के कारण चेहरे पर जलन होती थी, अमृत जल ग्रहण करने से बिल्कुल ठीक हूं।

14) बेटे को बोलने में परेशानी थी,5 महीने से इलाज चल रहा है। अमृत जल देना शुरू किया, डॉक्टर ने कहा कि चमत्कारिक तरीक़े से रिकवरी हो रही है।

15) अपने लिए अमृत जल बनाया इस एफर्मेशन के साथ कि सासु मां के साथ लव, रिस्पेक्ट, फेथ, केयर से भरे संबंध हैं। कल ही सासु मां का फ़ोन आया कि वो हमारे साथ रहना चाहती हैं।

16) जीजाजी के स्टेंट डाला गया और डॉक्टर ने बताया कि उनके पेट में करोड़ों की मात्रा में स्टोन बन रहे हैं जिसका कोई इलाज नहीं है। मैंने लगातार उन्हें अमृत जल दिया । 15 दिन बाद सीटी स्कैन करवाया जिसमें नारायण की कृपा से एक भी स्टोन नहीं आया।

17) बेटे को अमृत जल दिया, उसके मन मुताबिक जॉब मिल गई है।

18) पति को 39 साल से सोरायसिस की समस्या है। अमृत जल से 90 प्रतिशत ठीक हो चुके हैं।

19) 9 नंबर का चश्मा लगता था। जल साधना से 3 नंबर का रह गया है।

20) बच्चे आपस में बहुत झगड़ा करते थे। अमृत जल से दोनों के स्वभाव में बहुत बदलाव आया है और अब वे प्रेम से रहते हैं।

21) 3 साल से समृध्दि नारायण हेल्प अवस्था में चल रही थी। अमृत ग्रहण करने से पति को नए अवसर मिलने लगे हैं।

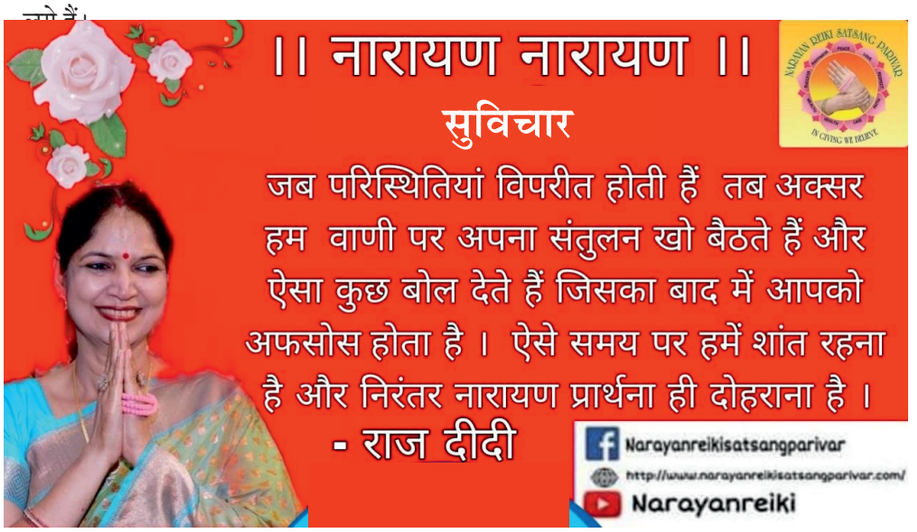

प्रेरणादायक वृत्तांत

इस बार के प्रेरणादायक वृत्तांत में हम कुछ ऐसी कहानियाँ लाये हैं जो गुरु बनकर आपके जीवन को एक नया दृष्टिकोण देंगी । कहानियाँ वही पर एक नये नज़रिए से ।

रोटी

किसी गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति अपने बेटे और बहू के साथ रहता था । परिवार सुखी संपन्न था किसी तरह की कोई परेशानी नहीं थी । बूढ़ा बाप जो किसी समय अच्छा खासा नौजवान था आज बुढ़ापे से हार गया था, चलते समय लड़खड़ाता था लाठी की जरुरत पड़ने लगी, चेहरा झुर्रियों से भर चुका था बस अपना जीवन किसी तरह व्यतीत कर रहा था।

घर में एक चीज़ अच्छी थी कि शाम को खाना खाते समय पूरा परिवार एक साथ टेबल पर बैठ कर खाना खाता था । एक दिन ऐसे ही शाम को जब सारे लोग खाना खाने बैठे, बेटा ऑफिस से आया था भूख ज्यादा थी सो जल्दी से खाना खाने बैठ गया और साथ में बहू और उसका एक बेटा भी खाने लगे ।

बूढ़े हाथ जैसे ही थाली उठाने को हुए थाली हाथ से छिटक गयी थोड़ी दाल टेबल पर गिर गयी । बहू बेटे ने घृणा दृष्टि से पिता की ओर देखा और फिर से अपना खाने में लग गए। बूढ़े पिता ने जैसे ही अपने हिलते हाथों से खाना खाना शुरू किया तो खाना कभी कपड़ों पर गिरता कभी जमीन पर ।

बहू ने चिढ़ते हुए कहा – हे राम कितनी गन्दी तरह से खाते हैं मन करता है इनकी थाली किसी अलग कोने में लगवा देते हैं, बेटे ने भी ऐसे सिर हिलाया जैसे पत्नी की बात से सहमत हो । उनका बेटा यह सब मासूमियत से देख रहा था ।

अगले दिन पिता की थाली उस टेबल से हटाकर एक कोने में लगवा दी गयी । पिता की डबडबाती आँखे सब कुछ देखते हुए भी कुछ बोल नहीं पा रहीं थी।

बूढ़ा पिता रोज़ की तरह खाना खाने लगा, खाना कभी इधर गिरता कभी उधर । छोटा बच्चा अपना खाना छोड़कर लगातार अपने दादा की तरफ देख रहा था ।

माँ ने पूछा, 'क्या हुआ बेटे तुम दादा जी की तरफ क्या देख रहे हो और खाना क्यों नहीं खा रहे?'

बच्चा बड़ी मासूमियत से बोला, 'माँ मैं सीख रहा हूँ कि वृद्धों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, जब मैं बड़ा हो जाऊँगा और आप लोग बूढ़े हो जाओगे तो मैं भी आपको इसी तरह कोने में खाना खिलाया करूँगा' ।

बच्चे के मुँह से ऐसा सुनते ही बेटे और बहू दोनों काँप उठे शायद बच्चे की बात उनके मन में बैठ गयी थी क्योंकि बच्चे ने मासूमियत के साथ एक बहुत बड़ा सबक दोनों लोगों को दिया था।

बेटे ने जल्दी से आगे बढ़कर पिता को उठाया और वापस टेबल पर खाने के लिए बिठाया और बहू भी भाग कर पानी का गिलास लेकर आई कि पिताजी को कोई तकलीफ ना हो ।

तो मित्रों, माँ बाप इस दुनिया की सबसे बड़ी पूँजी हैं आप समाज में कितनी भी इज्ज़त कमा लें या कितना भी धन इकट्ठा कर लें लेकिन माँ बाप से बड़ा धन इस दुनिया में कोई नहीं है।

माँ बाप की हमेशा निःस्वार्थ भाव से सेवा एवं इज्ज़त करिए क्योंकि वह आपके पहले गुरु हैं जिन्होंने आपको जीवन दिया और जीवन जीना सिखलाया ।

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

सच्चा गुरु-अंतर्मन

बहुत पुरानी बात है, उन दिनों आज की तरह स्कूल नहीं होते थे। शिक्षा प्रणाली थी और छात्र गुरुकुल में ही रहकर पढ़ते थे। उन्हीं दिनों की बात है। एक विद्वान शिक्षक थे, उनका नाम था- राधे गुप्त। उनका गुरुकुल बड़ा ही प्रसिद्ध था, जहाँ दूर दूर से बालक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे।

राधे गुप्त की पत्नी का देहांत हो चुका था, उनकी उम्र भी ढलने लगी थी, घर में विवाह योग्य एक कन्या थी, जिनकी चिंता उन्हें हर समय सताती थी। पंडित राधे गुप्त उसका विवाह ऐसे योग्य व्यक्ति से करना चाहते थे, जिसके पास संपत्ति भले न हो पर वह बुद्धिमान हो।

एक दिन उनके मन में विचार आया, उन्होंने सोचा कि क्यों न वे अपने शिष्यों में ही योग्य वर की तलाश करें । ऐसा विचार कर उन्होंने बुद्धिमान शिष्य की परीक्षा लेने का निर्णय लिया, उन्होंने सभी शिष्यों को एकत्र किया और उनसें कहा- 'मैं एक परीक्षा आयोजित करना चाहता हूँ, इसका उद्देश्य यह जानना है कि कौन सबसे बुद्धिमान है।'

मेरी पुत्री विवाह योग्य हो गईं है और मुझें उसके विवाह की चिंता है, लेकिन मेरे पास पर्याप्त धन नहीं है, इसलिए मैं चाहता हूँ कि सभी शिष्य विवाह में लगने वाली सामग्री एकत्र करें, भले ही इसके लिए चोरी का रास्ता क्यों न चुनना पड़े। लेकिन सभी को एक शर्त का पालन करना होगा, शर्त यह है कि किसी भी शिष्य को चोरी करते हुए कोई देख न सके।

अगले दिन से सभी शिष्य अपने अपने काम में जुट गये । हर दिन कोई न कोई न कोई शिष्य अलग अलग तरह की वस्तुएं चुरा कर ला रहा था और गुरूजी को दे रहा था । राधे गुप्त उन वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखते जा रहे थे क्योंकि परीक्षा के बाद उन्हें सभी वस्तुएं उनकें मालिक को वापिस करनी थी।

परीक्षा से वे यही जानना चाहते थे कि कौन सा शिष्य उनकी बेटी से विवाह करने योग्य है। सभी शिष्य अपने अपने दिमाग से कार्य कर रहे थे। लेकिन उनमें से एक छात्र रामास्वामी, जो गुरुकुल का सबसे होनहार छात्र था, चुपचाप एक वृक्ष के नीचे बैठा कुछ सोच रहा था। उसे सोच में बैठा देख राधे गुप्त ने कारण पूछा. रामास्वामी ने बताया, 'आपने परीक्षा की शर्त के रूप में कहा था कि चोरी करते समय कोई देख न सके. लेकिन जब हम चोरी करते हैं, तब हमारी अंतरात्मा तो सब देखती है, हम खुद से उसे छिपा नहीं सकते, इसका अर्थ यही हुआ न कि चोरी करना व्यर्थ है।'

उसकी बात सुनकर राधे गुप्त का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा. उन्होंने उसी समय सभी शिष्यों को एकत्र किया और उनसें पूछा- 'आप सबने चोरी की.. क्या किसी ने देखा? सभी ने इनकार में सिर हिलाया. तब राधे गुप्त बोले 'बच्चों ! क्या आप अपने अंतर्मन से भी इस चोरी को छुपा सके?'इतना सुनते ही सभी बच्चों ने सिर झुका लिया। इस तरह गुरूजी को अपनी पुत्री के लिए योग्य और बुद्धिमान वर मिल गया। उन्होंने रामास्वामी के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया। साथ ही शिष्यों द्वारा चुराई गई वस्तुएं उनके मालिकों को वापिस कर बड़ी विनम्रता से क्षमा मांग ली।

शिक्षा :-

कोई भी कार्य अंतर्मन से छिपा नहीं रहता और अंतर्मन ही व्यक्ति को सही रास्ता दिखाता है। इसलिए मनुष्य को कोई भी कार्य करते समय अपने मन को जरुर टटोलना चाहिए, क्योंकि मन सत्य का ही साथ देता है।

भाग्य की तीसरी रोटी

एक सज्जन ने पत्नी के स्वर्ग वास हो जाने के बाद अपने दोस्तों के साथ सुबह शाम पार्क में टहलना और गप्पें मारना, पास के मंदिर में दर्शन करने को अपनी दिनचर्या बना लिया था। वह अपने दोस्तों से हमेशा भाग्य की तीसरी रोटी की चर्चा किया करते थे ।

हालांकि घर में उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं थी। सभी उनका बहुत ध्यान रखते थे, लेकिन आज सभी दोस्त चुपचाप बैठे थे क्योंकि उनका एक हम उम्र दोस्त नारायण धाम चला गया था।

सहसा वह बोले, 'आप सब हमेशा मुझसे पूछते थे कि मैं भगवान से तीसरी रोटी क्यों माँगता हूँ? आज बतला देता हूँ'

'क्या बहू तुम्हें सिर्फ तीन रोटी ही देती है ?' मजाकिया लहज़े में एक दोस्त ने पूछा।

'नहीं यार! ऐसी कोई बात नहीं है, बहू बहुत अच्छी है। असल में 'रोटी' चार प्रकार की होती है।'

पहली 'सबसे स्वादिष्ट' रोटी 'माँ' की 'ममता' और 'वात्सल्य' से भरी हुई। जिससे पेट तो भर जाता है, पर मन कभी नहीं भरता।

एक दोस्त ने कहा, सोलह आने सच, पर शादी के बाद माँ की रोटी कम ही मिलती है।'

उन्होंने आगे कहा 'हाँ, वही तो बात है।

दूसरी रोटी पत्नी की होती है जिसमें अपनापन और 'समर्पण' भाव होता है जिससे 'पेट' और 'मन' दोनों भर जाते हैं।',

क्या बात कही है यार ?' ऐसा तो हमने कभी सोचा ही नहीं।

फिर तीसरी रोटी किस की होती है?' एक दोस्त ने सवाल किया।

'तीसरी रोटी बहू की होती है जिसमें सिर्फ 'कर्तव्य' का भाव होता है जो कुछ कुछ स्वाद भी देती है और पेट भी भर देती है.. ... और वृद्धाश्रम की परेशानियों से भी बचाती है',

थोड़ी देर के लिए वहाँ चुप्पी छा गई।

'लेकिन ये चौथी रोटी कौन सी होती है ?' मौन तोड़ते हुए एक दोस्त ने पूछा-

'चौथी रोटी नौकरानी की होती है।

जिससे ना तो इन्सान का 'पेट' भरता है न ही 'मन' तृप्त होता है और 'स्वाद' की तो कोई गारँटी ही नहीं है',

तो फिर हमें क्या करना चाहिये यार?

माँ की हमेशा पूजा करो, पत्नी को सबसे अच्छा दोस्त बना कर जीवन जियो, बहू को अपनी बेटी समझो और छोटी मोटी ग़लतियाँ नज़रन्दाज़ कर दो..

बहू भी खुश रहेगी तो बेटा भी ध्यान रखेगा।

यदि हालात चौथी रोटी तक ले आये तो भगवान का आभार जताओ कि उसने जीवित रखा हुआ है..

और अब स्वाद पर ध्यान मत दो केवल जीने के लिए थोड़ा कम खाओ ताकि आराम से बुढ़ापा कट जाए।

बड़ी खामोशी से दोस्त सोच रहे थे वाकई हम कितने खुशकिस्मत हैं।

पारिवारिक मतभेद को जग ज़ाहिर ना करें

महाभारत काल में जब पांडव वनवास काल में थे तो अपना जीवन एक कुटिया में रहकर बिता रहे थे जिसके बारे में जब दुर्योधन को पता चला तो उसने पांडवों को नीचा दिखाने के लिए पूर्ण ऐश्वर्य के साथ वन में जाने की सोची ताकि वो पांडवों को ईर्ष्या से जलता देख सके । जब दुर्योधन वन के लिए निकला, तब उसकी रास्ते में गंधर्वराज से मुलाक़ात हुई। उसी वक्त दुर्योधन ने सोचा कि गंधर्वकुमार को हराकर पांडवों को अपनी ताकत का प्रमाण देने का अच्छा मौका है। ऐसा सोच उन्होंने गंधर्व राज पर आक्रमण कर दिया लेकिन गंधर्व राज अत्यंत शक्तिशाली थे । उन्होंने दुर्योधन को हरा दिया और उसे बंदी बना दिया । जब इसकी सूचना पांडवों को मिली तब युधिष्ठिर ने भाईयों को आदेश दिया कि वे जाकर दुर्योधन को वापस लायें । यह सुनकर भीम ने कहा – भ्राता ! यूँ तो दुर्योधन हमारा भाई है लेकिन वो सदैव हमारा अहित सोचता है तो ऐसे में उसकी मदद क्यों की जाये । तब युधिष्ठिर ने उत्तर दिया – भले ही हमारा और हमारे भाईयों का बैर है लेकिन वो एक घर की बात है जिसे जग ज़ाहिर करना ग़लत है । पारिवारिक झगड़े परिवार में ही रहे उसी में परिवार की इज्ज़त है। इसे यूँ प्रदर्शित करना पूर्वजों का अपमान है । बड़े भाई की आज्ञा मान पांडव गंधर्वराज से युद्ध करते हैं और दुर्योधन को छुड़ा लाते हैं ।

आज कल परिवार में झगड़े बढ़ते ही जा रहे हैं लेकिन ये आम बात है परन्तु इनका बखान अन्य के सामने करना ग़लत है । इससे जग हँसाई होती है और आपके परिवार की कमज़ोरी सभी के सामने उजागर होती है । परिवार में कितना ही बैर क्यों ना हो लेकिन विपत्ति में हमेशा अपनों का साथ देना चाहिये । आजकल आम बात है परिवार में मनमुटाव होना लेकिन अगर इसकी भनक दूसरों को लगती है तो वे आपका मजाक उड़ाते हैं । साथ ही इसका फायदा उठाकर आपको नुकसान भी पहुँचा सकते हैं । जिस तरह से अंग्रेजों ने आपसी मत भेद का फायदा उठाकर कई सालों तक हमारे देश पर राज किया ।

अगर आप परिवार के झगड़ों की बातें अन्य के सामने करते हैं तो आपके बुजुर्गों एवम उनके संस्कारों पर लोग प्रश्नचिन्ह लगाते हैं जिससे परिवार की साख मिट्टी में मिल जाती है । अतः जहाँ तक कोशिश हो पारिवारिक मनमुटाव को परिवार में ही रहने दें उसका बखान कर परिवार की नींव कमज़ोर ना करें ।

महाभारत में ऐसी कई घटनायें हैं जो हमें ज्ञान का पाठ एवम जीवन व्यवहार का ज्ञान देती हैं । जिन्हें पढ़कर एवम सुनकर या सुनाकर हम सीख एवम सिखा सकते हैं । कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं करती अपितु छोटे में बड़ा ज्ञान दे जाती हैं ।

Pavaan Vani

Dear Narayan Premiyo,

|| Narayan Narayan ||

Guru holds great importance in life. He is like the ray that brings light to life. Although it is not a formal title, every person from whom we acquire knowledge and improve our life is a Guru**. Our first teachers are our parents**, who along with giving birth, introduce us to our existence. They teach us to do the basic and essential tasks of life and prepare us for a meaningful life by giving good values. **The second guru is our family** from whom we learn the intimacy of relations, love, care, respect for each other, brotherhood, and harmony. Family fills you with a sense of belonging**. You meet your third Guru in your school**, who provides you with bookish knowledge so that you become an educated person by reading and writing, develop a sensible cooperative attitude towards life as well as the people you meet in life and become capable to fulfill your needs in the material world. **The fourth guru are your friends** who teach you that it is a relationship which is full of emotions and that they are always ready to cooperate with you. In this way, as you move forward in life, you meet many people from whom you learn something knowingly or unknowingly which helps you to lead a meaningful life. On this Guru Purnima, dedicate your life to such gurus. Do something that brings a smile on their face, and you are the reason for it. If you smile then your luck smiles but if someone else smiles because of you then this universe smiles, when the universe smiles then you easily achieve everything in life which is not in your destiny and live a meaningful life. This becomes a matter of pride to all those gurus who gave you beautiful clues of life, by adopting which you can give meaning to your life.

All good,

R. Modi

CO-EDITOR

Deepti Shukla 09869076902

EDITORIAL TEAM

Vidya Shastry 09821327562
Mona Rauka 09821502064

Main Office

Narayan Bhawan
Topiwala Compound, station road,
Goregaon (West), Mumbai.

Editorial Office

Shreyas Bunglow No 70/74 Near Mangal Murti
Hospital, Gorai link Road, Borivali (W) Mumbai -92.

Regional Office

AHMEDABAD	JAIWINI SHAH	9712945552
AKOLA	SHOBHA AGRAWAL	9423102461
AKOLA	RIYA AGARWAL	9075322783
AMRAVATI	TARULATA AGRAWAL	9422855590
AURANGABAD	MADHURI DHANUKA	7040666999
BANGALORE	KANISHKA PODDAR	7045724921
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9327784837
BANGALORE	SHUBHANGI AGRAWAL	9341402211
BASTI	POONAM GADIA	9839582411
BIHAR	POONAM DUDHANI	9431160611
BHILWADA	REKHA CHOUDHARY	8947036241
BHOPAL	RENU GATTANI	9826377979
CHENNAI	NIRMALA CHOUDHARY	9380111170
DELHI (NOIDA)	TARUN CHANDAK	9560338327
DELHI(NOIDA)	MEGHA GUPTA	9968696600
DELHI (W)	RENU VIJ	9899277422
DHULIA	RENU BHATWAL	878571680
GONDIYA	RADHIKA AGRAWAL	9326811588
GOHATI	SARLA LAHOTI	9435042637
HYDERABAD	SNEHALATA KEDIA	9247819681
INDORE	DHANSHREE SHIRALKAR	9324799502
JALANA	RAJNI AGRAWAL	8888882666
JALGAON	KALA AGARWAL	9325038277
JAIPUR	PREETI SHARMA	9461046537
JAIPUR	SUNITA SHARMA	8949357310
JHUNJHNU	PUSHPA DEVI TIBEREWAL	9694966254
ICHAKARANJI	JAY PRAKASH GOENKA	9422043578
KOLHAPUR	RADHIKA KUMTHEKAR	9518980632
KOLKATTA	SWETA KEDIA	9831543533
KANPUR	NEELAM AGARWAL	9956359597
LATUR	JYOTI BHUTADA	9657656991
MALEGAON	REKHA GARODIA	9595659042
MALEGAON	AARTI CHOUDHARY	9673519641
MALEGAON	AARTI DI	9518995867
MORBI	KALPANA CHOUARDIA	8469927279
NAGPUR	SUDHA AGRAWAL	9373101818
NANDED	CHANDA KABRA	9422415436
NAWALGARH	MAMTA SINGRODIA	9460844144
NASIK	SUNITA AGARWAL	9892344435
PUNE	ABHA CHOUDHARY	9373161261
PATNA	ARBIND KUMAR	9422126725
PURULIYA	MRIDU RATHI	9434012619
PARATWADA	RAKHI MANISH AGRAWAL	9763263911
RAIPUR	ADITI AGRAWAL	7898588999
RANCHI	ANAND CHOUDHARY	9431115477
SURAT	RANJANA AGARWAL	9328199171
SIKAR (RAJASTHAN)	SUSHMA AGARWAL	9320066700
SHRI GANGANAGAR	MADHU TRIVEDI	9468881560
SATARA	NEELAM KDAM	9923557133
SHOLAPUR	SUVARNA BALDEVA	9561414443
SILIGURI	AKANKSHA MUNDHRA	9564025556
TATA NAGAR	UMA ARAWAL	9642556770
ROURKELA	UMA ARAWAL	9776890000
UDAYPUR	GUNWATI GOYAL	9223563020
UBLI	PALLAVI MALANI	9901382572
VARANASI	ANITA BHALOTIA	9918388543
VIJAYWADA	KIRAN JHAWAR	9703933740
VARDHA	RUPA SINGHANIA	9833538222
VISHAKAPATTNAM	MANJU GUPTA	9848936660

INTERNATIONAL CENTRE NAME AND NUMBER

AUSTRALIA	RANJANA MODI	61470045681
DUBAI	VIMLA PODDAR	+971528371106
KATHMANDU	RICHA KEDIA	+977985-1132261
SINGAPORE	POOJA GUPTA	+6591454445
SHRJAH-UAE	SHILPA MANJARE	+971501752655
BANGKOK	GAYATRI AGARWAL	+66952479920
VIRATNAGAR	MANJU AGARWAL	+977980-2792005
VIRATNAGAR	VANDANA GOYAL	+977984-2377821

|| 卐 ||

Editorial

Dear readers,

||Narayan Narayan||

Best wishes on the occasion of Guru Purnima. This monyh's issue of Satyug magazine is dedicated to the Guru of our life who taught us the true meaning of life and gave us a meaningful path in life. We need a Guru at every stage of our life with whom we can speak our mind and we can know whether what we are doing is right or not; who knows us more than us; who can guide us properly in our life. In this issue we will know more about Guru and his importance in life.

Salutations to that Guru tattva enshrined in all of you who gave right guidance to so many.

With best wishes on Guru Purnima-

Yours own,
Sandhya Gupta

To get
important message and information from NRSP Please Register yourself on 08369501979
Please Save this no. in your contact list so that you can get all official broadcast from NRSP

we are on net

You Tube

narayanreikisatsangparivar@narayanreiki

Publisher **Narayan Reiki Satsang Parivar,**
Printer - **Shrirang Printers Pvt. Ltd.,** Mumbai.
Call : 022-67847777

Call of Satyug

Guru is the other name for devotion, faith, and respect.

Knowledge is priceless and even more priceless is our teacher, who introduces us to that knowledge. The glory of the Guru is infinite, only a little company of Guru can provide salvation to the soul - Such is our precious Guru Raj Didi.

A guru is the person who first removes the shortcomings within himself so that he can show the right path to his disciples.

In life, Raj Didi had only one goal - what should I do to make my existence and living meaningful? This thinking of her gave new dimensions of contemplation, new sources of meditation, gave such wonderful messages of knowledge which were received directly from the universe in meditation and saved in the form of books in front of satsangis as they were received. The reading and contemplation of the book has served as mental food for the satsangis answering their various queries. Universal Messages Coffee table book and part 1 of Universal Message Encyclopedia are the brainchild of our simple looking Guru Raj Didi. Both are extraordinary books on the planes of Ramayana and Gita. It is a wonderful art to understand the mind of every satsangi without listening to it and to tell the solution in the Satsang. When we see Guru Maa Raj Didi playing her role very well in all characters, then suddenly it flows out of the mind: -

When you give knowledge, then you look like Dnyaneshwari.

When you tie in your affection, then you look like manifestation of affection itself. When you teach to use the right words, you look like Saraswati.

You look like Mahalakshmi when you teach the mantra to get abundance of money.

When you call with affection even when we make mistakes and say it is ok, then you look like a loving father.

When you ask us to seek the solution of our problems on our own then you look like a guiding elder sister.

When you give lots of blessings on achieving success and in our happiness, then you look like a birth mother.

To tell the truth, Guru Maa, you are like Narayani who is helping us to commune with Supreme Father- Narayan.

A guru's role is important in everyone's life. Every human being has a sense of respect and reverence towards the Guru and most of the times put the Guru above God. Guru makes to know yourself. He makes you self-realized, makes you realize the hidden powers within you. He has the answer to every question of yours and the Guru gives meaning to

that answer. The Guru makes you a partaker of the right action. Guru tells the technique to steer the boat of life beautifully and cross the ocean of life in the best possible way. Guru builds your personality. Guru embellishes you like a mother and grooms you like a father. elevates you to the level of the soul by introducing you to your true Self. Every person wants to know Guru's perspective in small to big decisions taken in his life. Guru is required in every sphere of life, be it craft, music, dance. To learn a particular trade, you must go to that guru and get the knowledge of that thing. Music gurus make you understand music. Art gurus make you understand the art. And the Dance Gurus give the understanding of dance. Similarly, the role of guru is important in every field.

Satsang of NRSP and Raj Didi are the Guru who teach us a new way of living life. It teaches us to keep our wishes in front of that Supreme Father with complete surrender every day, give our 100% towards everyone, display honesty, loyalty, humility and become filled with happiness, joy, enthusiasm as well as progress in life. It helps to open the path of progress, success, happiness, peace, prosperity easily. This is the profoundness of our Guru Maa Raj Di. These lines are perfect for Didi-

The person who makes our life easy with knowledge can alone be called Guru. A guru is the person who shows the disciple the road that takes to destination.

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि - गढ़ि काढ़ै खोट
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट

The Guru is the potter, and the disciple is the pitcher. Guru's hand gives the support from within, and hammers from outside to mold so that the evil of the disciple comes out and disciple gets refined. Similarly, Raj Didi has taught us through many sadhanas, in very simple language and in a very easy way.

1) Be comfortable, be simple and be such that wherever you exuberate happiness, joy, trust.

2) Give your best and get your best.

3) Do good and positive deeds, the result will be good.

4) If you want to become popular, then if someone has told you something good about someone, then convey it to him.

Don't spend time judging others. Give unconditional love and be entitled to a seven-star life full of love, respect, admiration.

5) The more love you give to others, the more you will receive, and it will be easier for you to give.

6) Walk on the path of goodness, benevolence, compassion, kindness, honesty, loyalty, humility and give meaning to life.

7) If you want to achieve anything, it is very important to have the attitude of service, dedication, and the feeling that -I am not a doer, I am just a medium.

8) When you adopt patience, punctuality, understanding and goodness in your nature, then your opinion about the world will be better.

9) Success comes to those who accept the success of others with an open heart.

10) Time is continuously moving forward. In this momentary time, if you get an opportunity to serve every living being with the spirit of selfless service in your life, then you should consider it as God's grace.

These are such Guru Mantras which Guru Maa Raj Didi has been giving us from time to time. On this Guru Purnima, as Guru Dakshina to our Guru Maa Raj Didi, the only thought within us, **'May I become what you want me to become'.**

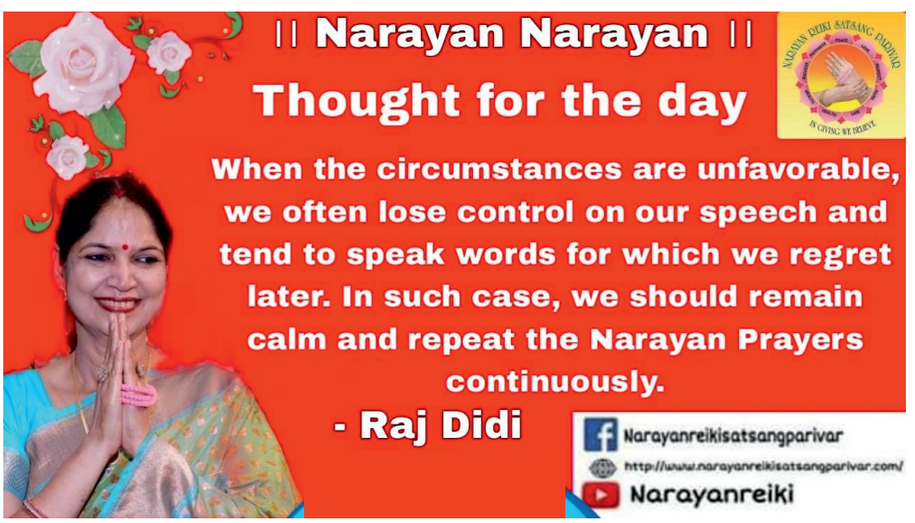

Wisdom Box
(Glimpses of Satsang)

In this column of Wisdom Box, we bring answers given by Raj Didi to the queries put up by satsangis.

Question: 1) How do we control our thoughts, speech, and behavior??

Raj Didi said that you will have to make a little extra effort, you will have to write what you do throughout the day. Within a week, there will be a change in your thoughts, speech, and behavior. Many people of NRSP have adopted this technique and there have been positive changes in their behavior.

Question: 2) What is the definition of a successful person, or what should we do to become successful in our life...??

Raj Didi said according to her the definition of success means a meaningful and content life. Didi has been in social service for 25 years. She used to do Sewa work from her home when the kids were small. The children used to come home by 2:30, then study and go to play in the evening. At that time someone told Didi that there is a hall nearby, if you go there, more patients will come, and your work will also increase. Didi asked for a few days' time to think about the proposal. This question was in her mind when she suddenly went in front of the TV, an interview of a 75-year-old celebrity was going on. The interviewer asked the celebrity," Today you have name, fame, money but is there anything in your life that you miss when you look back? "

She replied that when my children needed me then I was not present with them, today I need them, they are not with me". At the same time, Raj Didi made up her mind that she must be free from her Sewa work by 2:30 pm and will not compromise on the routine of the children.

Question: 3) What should we do for all wishes to be fulfilled in life...??

Raj Didi said "Your wish list should be small." In giving we believe". should be your priority. Raj Didi said that if we put more effort in fulfilling the wishes of others than in fulfilling our wishes, then we will get blessings from others. When we help others to fulfill their wishes, nature helps us to fulfill our primary wishes. Because of the blessings we get due to helping others fulfill their wishes, our work gets done automatically.

Question: 4) Everyone knows the benefits and importance of getting up early in the Brahma Muhurta, but in today's lifestyle many times people get late to sleep and are not able to get up early. What should we do so that we can get up early and adhere to this

lifestyle so that we get used to getting up early.

Raj Didi said, if you sleep at 11:00 then start sleeping 5 minutes earlier than that and if you wake up at 9:00 in the morning then start waking up 5 minutes earlier than that. By doing this you will gradually start waking up in Brahma Muhurta in a few months.

Question 5): - What should be done to make your work successful?

Raj Didi: - Good thoughts lead to good actions.

Mr. Madhav says that the negative energy resides within us in the form of anger, jealousy, hatred, ego, these are the most negative forms of energies and destroy our aura. Improvement is also not possible. If there is irritation and frustration towards the other person.

When Mr. A had feelings of irritation frustration towards another person, negative energy was activated within him. Whatever efforts

Mr. A took to make business successful his work was not done. As soon as Mr. A started sending positive waves to the other person, his work was completed smoothly.

We don't know when and where our negative energy goes and what work it does, we cannot even judge. Didi narrated two examples.

Case 1) The daughter-in-law of a family visited Didi for counselling, she was a teacher and she started talking about her 11 years old daughter. That her daughter was becoming careless day by day, the woman wanted her daughter to be sincere and responsible. The woman used to teach children, she wanted at least her daughter to be on the correct path. she asked how should she pray that the girl stays on the right path ...?? Didi enquired who all were in her house. The lady replied "Mother-in-law, father-in-law, husband, and daughter stay with her "Relations with mother-in-law are not good and she gets irritated on seeing her. Due to the feeling of irritation, negative vibrations from her body would affect her daughter. she would behave in a negative manner. Didi told her to send positive vibrations of respect and love towards her mother-in-law and take care of her. If she sends positive vibes to mother-in-law, then her daughter will become sincere and responsible. On waking up she has to visualize mother-in-law in front of her and say these positive affirmations 7 times – I love you, I like you, I respect you, Narayan bless you, Narayan bless you, Narayan bless you. She must do the same process at night before sleeping. Within a few days, due to positive affirmations and positive behavior practiced by the woman, her daughter started becoming sincere and responsible.

Raj Didi said, if you experience irritation and frustration on seeing someone, you do not

know what effect it has on the other person but your aura gets disturbed. In that state, you cannot achieve the things that you are destined for. You must be loving and caring for your family members who live with you. If you have negative feelings towards any member of the family, then you should remove them first because that negative energy does not allow you to move forward in your life. By doing this your aura becomes weak and you cannot move forward in life. Say "I love you; I like you; I respect you, Narayan bless you, Narayan bless you, Narayan bless you and your life will be filled with happiness, peace, health, prosperity, love, respect, faith, care". How much effect did this affirmation have on him??? But repeating this again and again will make your life prosperous and all these things will come in your life. There will be a lot of change in your life.

Question 6) If we are praying for a specific purpose and our purpose is not being fulfilled then our mind starts wavering, what should we do in such a situation...??

Raj Didi: - You are praying regularly, if you are praying regularly, then this is a sign from the universe that it will definitely listen to your prayer and your prayer will definitely be fruitful. Many people say that we will pray regularly but they are not able to do it and if you are praying regularly, it means that he is listening to your prayers. Raj Didi said if we are praying for a particular wish and our full focus is on that prayer and in the meanwhile any urgent need of ours may arise and our full focus is on our primary wish, and we do not pay attention to the urgent need. Even if we do not pay attention to urgent need the universe knows very well that our wish can be fulfilled later also, but what we need at this time must be fulfilled. When your essential need is met, you forget to thank The Divine because your entire focus is on your primary wish.

We hear from many people that we prayed a lot for a particular thing, but that wish did not come true, it is very sad. But after some time the same people say that even though we did not get that thing, what we have got today is very valuable. Let's give an example, many times we pray by giving a certain date that our work should be done by the end of July and if this work is not done for you. You ger upset but if you think a little you realize that many important works have been done in the process, which you had never even thought about. If your work is not done by the end of July, it becomes the responsibility of nature to give it to you along with interest and will bring many other things along with it.

If someone does even a little bit for you, then we feel that we should do something for them too. If we cannot do that much, then at least do a little bit. If this feeling comes to mind, then nature is not going to keep anything with itself, it will give us interest. We should be satisfied with the fact that if our wish is not fulfilled then nature will give us in multiples.

We should continue to express gratitude to The Divine. Raj Didi said that even if we have any such feeling in our mind that we must pray for some wish, then that feeling is also sent to us by nature itself. Out of 24 hours, we can pray for a maximum of 4 hours. In the rest of the time, we should check how our thoughts, behavior, and speech. If you hurt someone through speech and behavior, then your wish goes away from you. For this reason, many times it takes time for people's wishes to be fulfilled. You must take precautions.

Q7) Even if someone is praying for us, our karmic accounts get accumulated. Sometimes we do not even know how many people are praying for us, so how to settle it...??

Raj Didi replied, "If I am praying for you and you have not asked me to pray then you are not bound by karma. Good karma would accumulate in my account because I am praying for your good". Raj Didi said even if "I told you that I am praying for you, you do not accumulate any karma. You are required to give Energy Exchange as you have taken service from others you can Give a small chocolate, a rose. When we do not even know how many people are praying for us, on the other hand we are also praying for so many people who do not even know that we are praying for them. It balances automatically. Still, you feel many people are praying for me so you pray more for them. Sometimes you feel that it is necessary to help him by giving him cash, then you can also give him money. Even though you need prayer, unless you have requested him for prayers and the person in front is repeatedly saying that you are included in his prayers, then your karma is not accumulated.

Friends, these are some of the questions that often revolve in the mind of all of us. Read their answers and become entitled to a seven-star life by calming the curiosity of the mind.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Pratik Ladha on his birthday (17th June) for a seven-star life and success and happiness in all spheres.

Narayan divine blessings with Narayan shakti to Reshma Heda and Mahesh Heda on their marriage anniversary (30th June) for a seven star life and success and happiness in all spheres and years of togetherness.

Youth Desk

Guru- The one who takes us from darkness to light.

Today's youth who are the torch bearers of Narayan Reiki Satsang Parivar have to play the role of Guru for the coming generation. Today, through Satyug magazine, we call upon you to imbibe all the major qualities of Guru in your life so that you can guide the coming generation in the right direction.

Whenever you get an opportunity to play the role of a Guru, keep a few things in mind-

Your personality and conduct are the best example for your disciple, so follow the path you want them to follow and with full honesty. While suggesting this, a story comes to mind A mother took her five-year-old son, went to an accomplished saint, and said - Guru ji, this child eats a lot of jaggery. Put your hand on his head and make him understand that he should not eat so much jaggery. Guru ji smiled and said - Dear, bring him here after one month, then I will bless him. After a month, she again came to the saint and again said- Now you bless him so that he gives up eating jaggery. But the saint said that you should bring the child after a week. A week passed and that woman again appeared in front of the saint with her child. This time the Saint placed his hand on the child's head and said - Son, eating too much jaggery is not good for your health, so you should stop consuming jaggery.

The woman was feeling that the saint would perform some ritual, so out of curiosity she asked the saint - why did you take so long to say such a small thing. On this the saint replied that - O dear, I myself like jaggery very much, so first I had to give up jaggery. It took me so long to do this. I can preach only that which I follow wholeheartedly.

If you teach honesty, then first be honest in every field yourself.

A Guru must live in equanimity. Treating everyone with equality irrespective of position, money, prestige, fraternity; keeping aside the criteria of caste, religion, community and accepting everyone. Be like the sun that gives its energy equally to everything, be it slime or the Ganges water. In the same manner help all the disciples to progress.

When Krishna and Sudama were taking education at Guru Sandipan's place, even after knowing that Krishna is a divine soul, Sandipan would make both do equal service work, provide equal food, and treat all the disciples too equally. Such is our culture, which today's young generation must imbibe and keep alive.

Another fact that the Guru should take care of is to give the right advice. In Ramcharitmanas it has been told in a very beautiful way -

सचिव, वैद्य, गुरु तीन जो, प्रिय बोलेहि भय आस, राज धर्म तन तीन कर होए बेगही नास।

(Prime minister, Doctor, Guru, all three if flatter and do not speak truth out of fear then Kingdom, religion and body are destroyed.)

The Guru should support the truth fearlessly, only then the welfare of society and the disciple is possible.

First imbibe the ideals in your life and be instrumental in the creation of a beautiful Golden Age society endowed with the above-mentioned qualities.

||नारायण नारायण||

॥ 卐 ॥

Children's Desk

Adi Shankaracharya said, " Mouna Vyakhya prakatitha, para, Brahma thathwam yuvanam". (Meaning: I praise and salute Dakshinamurthy (The first Guru), who explains the true nature of the supreme Brahman through his state of silence).

A teacher imparts knowledge, A guru enlightens.

This issue of Satyug on Guru purnima is dedicated to the Guru.

Guru Purnima is a day solely dedicated to the guru.

According to Hindu mythology, Guru Purnima is the day when Lord Shiva transferred his knowledge to seven followers or "sapatarishis". Due to this, Lord Shiva came to be known as the First Guru.

Guru Purnima is also known as Vyasa Purnima because it is believed that Ved Vyasa, the author of Mahabharata was born on this auspicious day. Therefore, the name Vyasa Purnima came into existence.

In Jainism mythology, it is believed that Mahavira, one of the most famous Tirthakaras in Jainism got his first follower on this day and officially became a guru.

It is believed that Guru Buddha gave his first sermon on this day.

When we speak of Guru and discipline the first story that comes to our mind is the story of Ekalavya. Ekalavya was the son of a poor hunter. He wanted to learn archery to save the deer of the forests from leopards. His desire was to learn archery from Guru Dron Acharya. Dron Acharya was the Guru of the Pandavas and Kauravas and in those times, it was forbidden for the Royal Guru to take an outside student. But such was the dedication of Ekalavya, he made a statue of Guru Dron Acharya and practiced archery. Arjuna came to know of his archery skills and asked him who his Guru was. The answer was Guru Dron Acharya. When Arjuna took the matter up with Guru Dron Acharya, the Guru went to meet Ekalavya. As was the practice in those days, the Guru in lieu of his Guru Dakshina asked Ekalavya for his tight thumb. Without a second thought Ekalavya cut his thumb and gave it to the Guru.

One aspect of this story teaches us the importance of total surrender to the Guru. The second aspect teaches us how a Guru can lift your status from an ordinary student to being immortal. Today when we speak of discipline Ekalavya is the name which comes to every person's mind.

Choose your Guru wisely. Once you have chosen

follow your Guru, be in total surrender. Accept the words of your Guru as divine message of the universe.

Remember your actions should be such that the Guru reaches out to you. Blessings from Guru can lift you from an ordinary status to an extraordinary one.

Under The Guidance of Rajdidi

Guru is such a personality in our life, whose every moment is spent meditating on how his disciples can progress. For this, the Guru does sadhana, researches and propounds such unique sadhana and activities which the disciple can adopt for self-improvement. Such is our Guru Raj Didi who has this desire every moment that every person should live a seven-star life. For this purpose, this time Didi gave the sadhana to the satsangis to convert ordinary water into Amrut (nectar). Many people got many benefits from this practice. This time we are presenting this column under the Guidance of Raj Didi in a new style.

Miracle of Amrut water

On 18th May 2023, Raj Didi started the technique of healing the body-mind-wealth-relationship by turning water into life-giving Amrut (nectar) at the time of Brahma Muhurta prayers. Sharing of the miraculous effects of Amrut started coming from the very first day. Out of those countless miracles, some selected experiences are being shared with you here: -

1) I had a Narayan-Narayan relationship with a female relative for 35 years. Visualizing them, I took the Amrut on the very first day of the sadhana saying love you, like you, respect you. As soon as I took the Amrut, I felt immense peace in my mind and there was no malice left in my mind towards them, everything is feeling good.
2) The doctor told the pregnant woman that she would have to be given pain injections for delivery. Pain started on its own within a few hours of taking the Amrut and through normal delivery a baby boy was born.
3) I have been suffering from constipation for more than 15 years. I visited many doctors, took many types of treatment. Just one dose of Amrut brought complete relief, which had not happened for many years.
4) I had so much pain in my hand that it was difficult to even raise my hand. It is as if a miracle has happened by taking Amrut water.
5) I have come to visit London with my family, as soon as I came here, my stomach got upset, I became very weak. I thought my whole trip would go like this, started thinking of returning. B. P. was also high. Then I took Amrut Jal and in just one dose I felt completely healthy.
6) My pet mother cow was diagnosed with a chronic disease by the doctor and then several injections were also given, but it did not make any difference. My cow has been completely cured by your Amrut water and there is not even a trace of lump.

7) I keep things in place in a regular manner and expect the same from the members of the house. If any mistake happens, I repeat this mantra to keep my mind calm, my mind is calm and happy. Ever since I started taking Amrut water, my mind is calm every moment and I feel very light.

8) Relief in acidity

9) There is a big relief in Fischer's problem

10) Sugar level has become normal.

11) There was pain in the neck for many days, it was painful even to turn around. I started drinking water, since then the pain is forgotten.

12) Narayan-Narayan situation used to prevail in the house. Amrut water was given and now everyone lives with love for each other.

13) Due to diabetes there was a burning sensation on the face, I am fine by taking Amrut water.

14) Son had difficulty in speaking, treatment is going on for 5 months. Started giving Amrut water, the doctor said that the recovery is happening in a miraculous way.

15) Made Amrut Jal for myself with the affirmation that there is a relationship full of love, respect, faith, care with the mother-in-law. Just yesterday mother-in-law called to say that she wants to stay with us.

16) Brother-in-law's stent was inserted and the doctor said that crores of stones are being formed in his stomach for which there is no cure. I continuously gave him Amrut water. After 15 days CT scan was done in which by the grace of Narayan not even a single stone was visible.

17) Gave Amrut Jal to the son, got a job according to his wish.

18) Husband has psoriasis problem for 39 years. Ninety percent have been cured with Amrit Jal.

19) Used to wear glasses of number 9. Now my vision has improved and am sporting Number 3 glasses after the from water meditation.

20) The children used to quarrel among themselves a lot. There has been a lot of change in both with Amrut water and now they live in love.

21) Samrddhi Narayan was running in help mode for 3 years. My husband has started getting new opportunities by taking Amrut.

Inspirational Memoirs

卐

In this issue of Satyug the column Inspirational Memoirs, we have brought some such stories which just like a Guru will give a new perspective to your life. The Same stories with a new perception.

Roti

An old man lived with his son and daughter-in-law in a village. The family was happy and prosperous, and as such there were no problems of any kind. The old father, who once was a very young agile man had succumbed to old age and used to stagger while walking, needed a stick to walk, his face was full of wrinkles, and he was just leading his life somehow.

One thing that was good in the house was that while eating dinner in the evening, the whole family would eat together at the table. One day in the evening as usual the family sat down to eat dinner. The son had come from the office, and he was very hungry, so he quickly sat down to eat, and along with him, the daughter-in-law and one of her sons also started eating.

As soon as the old father picked up the plate to eat, the plate slipped from his hand and some food fell on the table.

The daughter-in-law looked at the father with disgust and continued eating her food.

As soon as the old father started eating food with his shaking hands, the food would sometimes fall on the clothes and sometimes on the ground.

The daughter-in-law teasingly said- O Ram, how dirtily he eats, I feel like putting his plate in a different corner, the son also nodded in agreement with his wife. Their son was watching all this innocently.

The next day father's plate was removed from that table and put in a different corner. Father's tearful eyes were not able to say anything even after seeing everything.

The old father started eating his food and as usual, the food fell here and there. The little child left his food and was continuously looking at his grandfather.

The Mother asked her child, 'What happened son, why are you looking at grandfather and why are you not eating'.

The child replied innocently, 'Mother, I am learning how to behave with the elderly, when I grow up and you guys become old, I will also feed you in a corner like this'.

On hearing this from the child, both the son and the daughter-in-law shuddered, perhaps the words of the child had imbibed in their mind because the child had innocently

given a great lesson to both the people.

The son quickly went and picked up the father and made him sit back at the table to eat and the daughter-in-law also ran and brought a glass of water so that the father would not have any problem.

So, friends and parents are the biggest wealth of this world, no matter how much respect you earn in society or how much money you collect, but there is no bigger wealth than parents in this world.

Always serve and respect your parents selflessly because they are your first teacher who gave you birth and taught you how to live life.

True Guru-Subconscious Mind

This story is from the olden days when there were no schools like today. The education system was such that the students used to stay in Gurukul and study. Once there was a learned teacher, his name was Radhe Gupta. His Gurukul was very famous, where children used to come from far and wide to get education.

Radhe Gupta's wife had passed away and his health was also declining. His daughter was of marriageable age and this worry used to haunt him all the time. Pandit Radhe Gupta wanted to marry her to a worthy person, who may not have wealth but was intelligent.

One day a thought came to his mind- why not look for a suitable groom among his own disciples. Thinking like this, he decided to test the intelligence of his disciple. He gathered all the disciples and said to them- "I want to conduct a test, the purpose of which is to know who amongst you is the most intelligent. My daughter has become of marriageable age, and I am worried about her marriage, but I do not have enough money. That's why I want all the disciples to collect the material required for marriage. Even if you must choose the path of theft for this. But everyone must follow one condition, the condition is that no one should see you stealing.

From the next day all the disciples got involved in their own work. Every day one or the other disciple was stealing different things and giving them to Guruji. Radhe Gupta kept those things in a safe place because after the examination he had to return all the things to their owner.

He wanted to know from the test which disciple was eligible to marry his daughter. All

the disciples were working with their own mind. But Navneet, one of the students, who was the most promising student of Gurukul, was silently thinking something sitting under a tree. Seeing him sitting in thought, Radhe Gupta asked the reason. The boy replied, Ramaswamy said, You had said as a condition of the exam that no one should be able to see us while we steal. But when we steal, then our conscience sees everything, we cannot hide it from ourselves. It does mean that stealing is futile.

Radhe Gupta's face lit up with happiness after listening to him. He gathered all the disciples at the same time and asked them - "You all stole. Did anyone see you?" Everyone shook their heads in denial. Then Radhe Gupta said, "Children! Could you hide this theft even from your inner self?" On hearing this, all the children bowed their heads. In this way Guruji found a suitable and intelligent husband for his daughter. He got his daughter married to Navneet. At the same time, after returning the things stolen by the disciples to their owners, he humbly apologized to everyone.

Moral: -

No work is hidden from our inner self and the inner self only shows the right path to the person. That's why a man must probe his mind while doing any work, because the mind always supports the truth.

The third bread of fortune.

A friend after his wife left for her heavenly abode made it his daily routine in the morning and evening to walk and chat in the park with his friends and visit the nearby temple. He always discussed with his friends about the third bread of fortune.

However, he had no problem of any kind at home. Everyone used to take care of him well, but today all the friends were sitting quietly because one of their old friends had left for his heavenly abode.

Suddenly he said, 'You all always used to ask me why I ask God for the third bread? I'll tell you today.

"Does your daughter-in-law give you only three rotis?" asked a friend jokingly.

"No man! There is no such thing, my daughter-in-law is very good was his reply.

Actually "there are four types of bread".

The first "most delicious" bread is filled with "mother's" love and "affection " which fills the stomach, but never fills the mind.

A friend said, this is true, but mother's bread is less available after marriage.

He continued, "Yeah, that's it.

The second bread(roti) belongs to the wife, which has a sense of affinity and "dedication", which fills both "stomach" and "mind".

What are you talking about?" We never thought about it like this.

Then whom does the third bread (roti) belong to?" asked a friend.

"The third bread (roti) belongs to the daughter-in-law, which only has a sense of "duty", which gives some taste and also fills the stomach.

There was silence for a while.

"But what is this fourth bread?" Breaking the silence a friend asked-

"The fourth bread (roti) belongs to the maidservant.

Which neither fills a person's "stomach" nor satisfies his "mind" and there is no guarantee of "taste".

Then what should we do man?

Always worship your mother, live life by making wife your best friend, consider daughter-in-law as your daughter and ignore minor mistakes.

If the daughter-in-law is also happy, then the son will also take care.

If the circumstances bring you to the fourth bread, then thank God that he has kept you alive. And now don't pay attention to the taste, just eat a little less to live so that old age can be cut comfortably.

All the Friends were thinking silently how lucky they were.

Family differences should not be disclosed to the world.

In the Mahabharata period, when the Pandavas were in exile, and were spending their days in a hut, Duryodhana coming to know of this decided to go the forest with full opulence to humiliate the Pandavas and show them down so that they would be envious of him. When Duryodhana left for the forest, he met Gandharva raj on his way. At the same time, Duryodhana thought that it was a good opportunity to prove his strength to the Pandavas by defeating Gandharva Kumar. Thinking like this, he attacked Gandharva Raj, but Gandharva Raj was very powerful. He defeated Duryodhana and imprisoned him.

When the Pandavas got information about this, Yudhishthira ordered the brothers to go and bring back Duryodhana. Hearing this, Bhima said - Brother! Although Duryodhana is our brother, he always thinks of harming us, then why should we help him in such a situation? Then Yudhishthira replied - Well! There is enmity between us and our brothers, but it is a family affair, and is wrong to reveal it to the world. Family quarrels remain in the family, there is respect for the family. To display it like this is an insult to the ancestors. The Pandavas obeyed the elder brother and fought with the Gandharva raj and rescued Duryodhana.

Now-a-days, quarrels are increasing in the family, and it is a common thing, but it is wrong to brag about it in front of others. This makes the world laugh and the weakness of your family is exposed in front of everyone. No matter how much enmity there may be in the family, one should always support loved ones in adversity. It is common these days to have estrangement in the family, but if others get a whiff of it, they make fun of you. At the same time, taking advantage of this can also harm you. The way the British ruled our country for many years by taking advantage of mutual differences.

If you talk about family disputes in front of others, then people question your elders and their rituals, due to which the reputation of the family gets destroyed. Therefore, as far as you try, let the family estrangement remain in the family, do not weaken the foundation of the family by bragging about it.

There are many such incidents in Mahabharata which enlightens us on life behavior which we can learn and teach by reading and listening or reciting. Stories do not just entertain but also give knowledge.

GOLDEN SIX

1) Prayer -Thank you Narayan for always being with us because of which today is the best day of our life filled with abundance of love, respect, faith care, appreciation, good news and jackpots . Thank you Narayan, for blessing us with infinite peace and energy. Narayan, Thank you for blessing us with abundant wealth which we utilize. We are lucky and blessed. With your blessings, Narayan, every person, place, thing, situation, circumstances, environment, wealth, time, transport, horoscope and everything associated with us is favourable to us. We are lucky and blessed .Thank you Narayan for granting us the boon of lifelong good health because of which we are absolutely healthy. Thank you Narayan with your blessings we are peaceful and joyous, we are positive in thoughts, words and deeds and we are successful in all spheres of life. Narayan dhanyawad.

2) Energize Vaults - Visualize a rectangular drawer in which you store your money. Visualize Rs 2000 notes stacked in a row, followed by Rs 500/- , Rs100/- , Rs 50/-, Rs20/- Rs10/- and a silver bowl with various denomination of coins. Now address the locker 'You are lucky, the wealth kept in you prospers day by day.' Request the notes "Whenever you go to somebody fulfill their requirements, bring prosperity to them and come back to me in multiples." Now say the Narayan mantra, "I love you, I like you, I respect you, Narayan Bless you" and chant Ram Ram 56

3) Shanti Kalash Meditation – Visualize a Shanti Kalash (Peace Pot) above your crown chakra. Chant the mantra" Thank You Narayan, with your blessing I am filled with infinite peace, infinite peace, infinite peace. Repeat this mantra 14 times."

4) Value Addition - Add value to cash and kind (even food items) you give to others by saying Narayan Narayan or by saying the Narayan mantra.

5) Energize Dining Table/ Office table - Visualize the dining table/ office table and energize it with Shanti symbol, LRFC Carpet, Cho Ku Rei and Lucky symbol. Give the message that all that is kept on the table turns into Sanjeevini.

6) Sun Rays Meditation - Visualize that the sun rays entering your house is bringing happiness, peace, prosperity, growth, joy, bliss, enthusiasm and health sanjeevini. Also visualize your wishes materializing. This process has to be visualized for 5 minutes.

Finest Pure Veg Hotels & Resorts

The Byke

A HOTEL RETREAT

EAT GREEN • STAY EVERGREEN

Our Hotels : Matheran | Goa | Manali | Jaipur | Thane | Puri | UPCOMING BORIVALI (Mumbai)

THE BYKE HOSPITALITY LIMITED

Shree Shakambhari Corporate Park,Plot No.156-158,

Chakravati Ashok Complex, J.B.Nagar, Andheri (East), Mumbai - 400099.

T.: +91 22 67079666 | E.: sales@thebyke.com | W.: www.thebyke.com